

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-7 अंक-8 फरवरी, 1992

संपादक
विनोद रायना

सह-संपादक
राजेश उत्साही
कविता सुरेश

संपादन सहयोग
टुलटुल बिस्वास

कला-सज्जा
जया विवेक

उत्पादन/वितरण
कमलसिंह, मोहन श्रीवास्तव

चकमक का चंदा
एक प्रति : चार रुपए
छमाही : बीस रुपए
वार्षिक : चालीस रुपए

चंदा, मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट से एकलव्य के नाम पर भेजें। कृपया चैक न भेजें।

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य,
ई-1/208 अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462016 (म.प्र.)
फोन : [illegible]

कागज़ : 'यूनिसेफ' के सौजन्य से।
सहयोग : राष्ट्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी संचार परिषद (विज्ञान व प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली)



नम्रता महलगमैया, छठवीं, केशकाल, बस्तर

इस अंक में....

विशेष

कविताएं

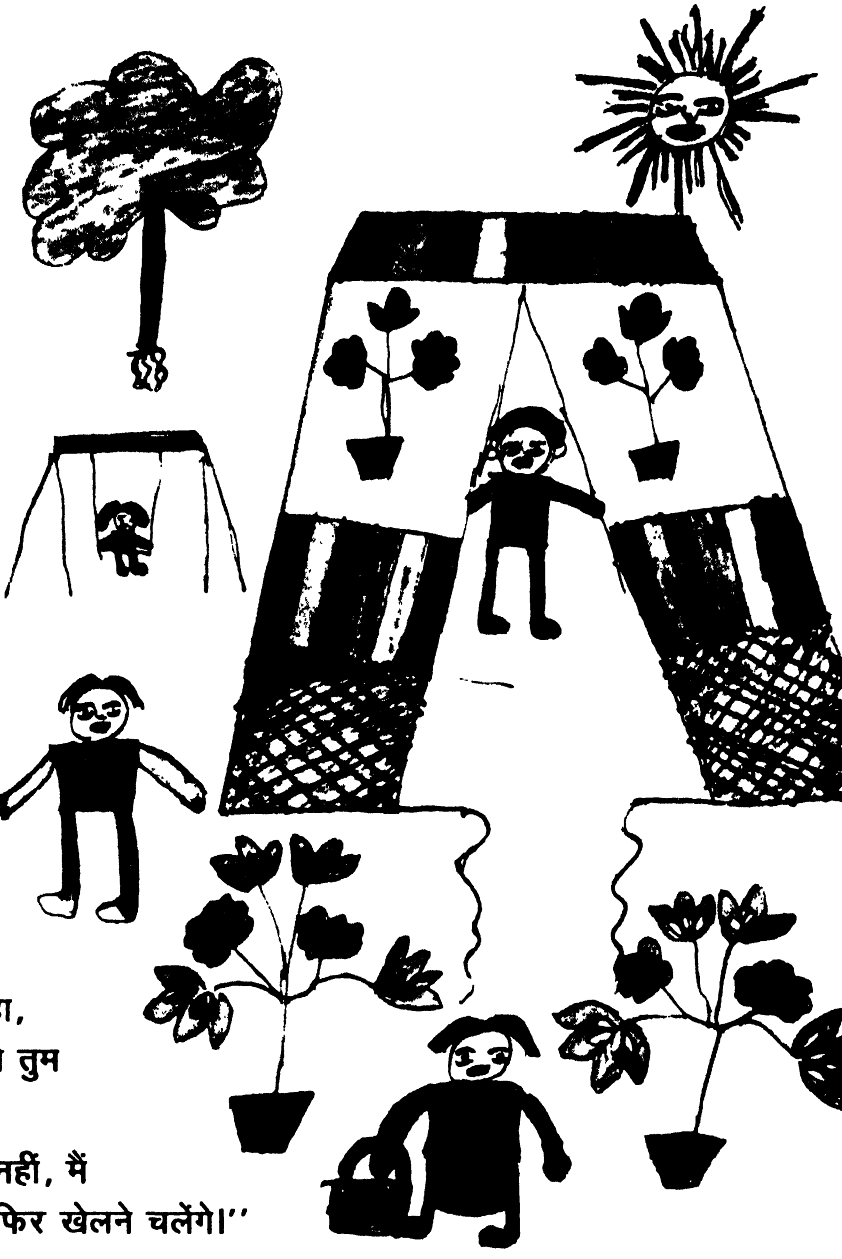
कहानियां

हर बार की तरह

और यह भी

आवरण पर
एक प्राचीन पुर्तगाली जहाज़।
अमेरिका के मूल निवासी (बाएं) और कोलम्बस (दाएं)।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यवसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित । है।



बनवे, छठवीं, प्रोपलपुर, इटारसी

पिटाई

जब मैं घर से निकलकर बाहर जा रहा था तो रास्ते में मुझे मेरा दोस्त मिल गया। उसने मुझसे कहा,''चलो फुटबॉल खेलने चलें।''

मैंने कहा, ''नहीं, मैं अभी बाज़ार काम से जा रहा हूं।''

तो उसने कहा, ''चलो यार, काम तो तुम बाद में कर लेना।''

मैंने कहा, ''नहीं, मैं पहले काम करूंगा, फिर खेलने चलेंगे।''

लेकिन वह मुझे ज़बरदस्ती खेलने ले गया। मैं उसके साथ फुटबॉल खेलने लगा। मैं यह भूल गया कि काम करना है। और मैं खेलकर जब घर गया तो मम्मी ने पूछा, ''क्यों सामान ले आए?''

मैं घबरा गया। मम्मी ने कहा, ''कहां है सामान?''

मैंने कहा, ''मैं भूल गया था।''

मम्मी ने कहा, ''पैसे मुझे दो।''

मैंने जेब में हाथ डाला तो पैसे मेरी जेब में नहीं थे। तो मम्मी ने मुझको बहुत मारा।

प्रवीण कुमार शर्मा, चौदह वर्ष, सुल्तानपुर, रायसेन

गांव और जंगल

मैं एक बार एक जंगल में फूल लेने के लिए गया। मैं फूल तोड़ने लगा तो मुझे एक चीता दिखाई दिया। मैं दौड़ता-दौड़ता एक गांव में आया। गांव जंगल के पास ही था। एक आदमी ने मुझसे पूछा, ''क्यों भाई भागकर क्यों जा रहे हो? तुम पर ऐसी कौन-सी मुसीबत आ पड़ी।''

मैंने कहा, ''मेरे पीछे एक चीता पड़ गया है।''

उस आदमी ने कहा,''अंदर आ जाओ।''

मैं घर के अंदर गया तो उस आदमी ने मुझे भोजन कराया और कुछ फल खाने को दिए। फिर जब मैं घर से बाहर निकला तो चीता न जाने कहां चला गया था। मैंने ख़ुश होकर उस आदमी को धन्यवाद दिया।

चित्र एवं कहानी ❑ गणपतलाल पाटीदार, आठवीं, बालागुड़ा, मंदसौर



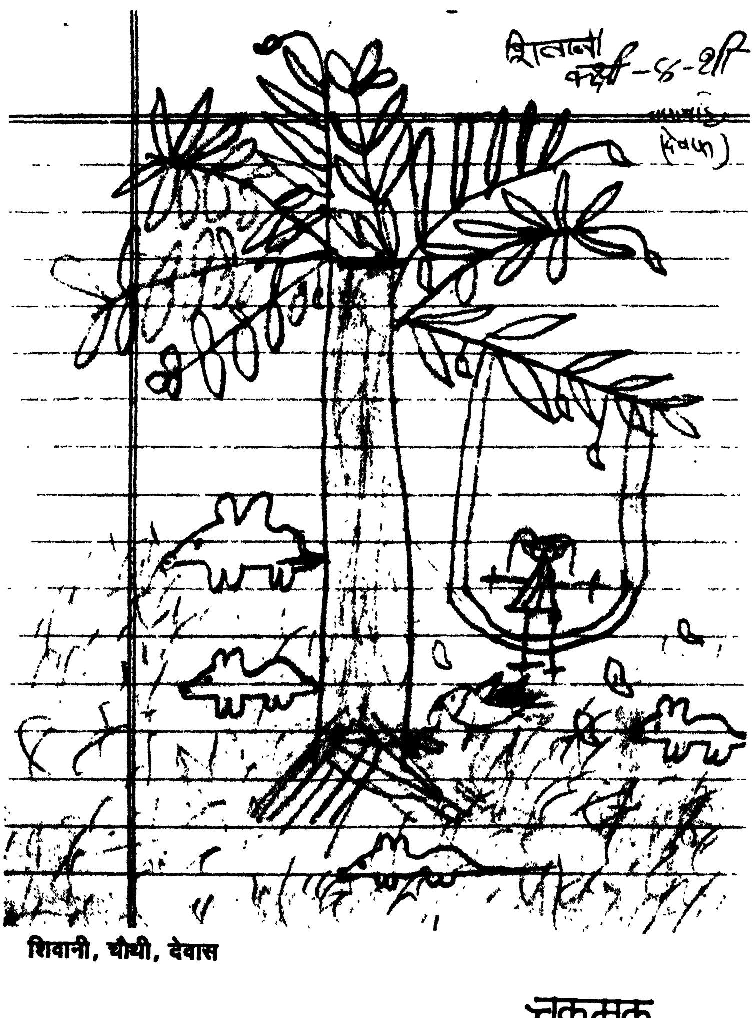
मीकू का नया घर

सितंबर, 91 में प्रकाशित कहानी 'मीकू फंसा पिंजरे में' को दो और पाठकों ने आगे बढ़ाकर भेजा है। ये दोनों कहानियां यहां प्रकाशित कर रहे हैं।

जब मीकू प्रयोगशाला से बाहर निकला तो उसने देखा कि एक मोटा आदमी जिसने बहुत अच्छे कपड़े पहन रखे थे। उसके पास एक बिल्ली थी। बिल्ली को सिर्फ़ देखने की देर थी कि मीकू के तो होश उड़ गए तथा वह बहुत तेज़ भागा ताकि अपना बचाव कर सके।

मीकू ने सोचा कि उसे कहीं पर छिप जाना चाहिए। वह एक घर में एक नाली के द्वारा अंदर आ गया। उस समय घर के मालिक कहीं बाहर गए हुए थे। मीकू ने देखा कि घर में कोई नहीं है। मीकू की ख़ुशी का ठिकाना ना रहा और वह ख़ुशी से नाच उठा। उसने खाना ढूंढना शुरू किया। मीकू जल्दी ही रसोईघर में खाना ढूंढने में सफल हो गया। उसने भरपेट खाना खाया फिर सोचा कि अब उसे यहां पर नया घर बना लेना चाहिए।

मीकू ने अपना नया घर बनाना शुरू कर दिया। मीकू ने देखा कि इस घर के मालिक तो देर रात तक नहीं आएंगे तो उसने अपना काम जारी रखा और एक बहुत अच्छा बिल बना लिया। जिसको कोई व्यक्ति ढूंढ नहीं सकता था। एक बार तो मीकू भी धोखा खा गया। उसने सोचा कि उसके गुरू ने बहुत अच्छा किया जो उसे ऐसा बिल बनाने की शिक्षा दी जिसे कोई नहीं ढूंढ सके।



शिवानी, चौथी, देवास

रात भर मीकू अपने नए घर में खर्राटे भर के सोता रहा आराम की नींद में। जब मीकू की नींद खुली तो उसने देखा कि उस घर के मालिक आ गए हैं। मीकू को बहुत बुरा लगा। उसने सोचा कि काश ये लोग अभी चले जाएं। मीकू ने जो चाहा वही हुआ। घर के मालिक चले गए तथा खाने का कुछ सामान टेबिल पर छोड़ गए। मीकू बिल से बाहर निकला तथा उसने चारों तरफ देखा कि कहीं कोई नहीं है तो ख़ुशी से उछल पड़ा। ख़ूब जमकर खाना खाया। मीकू ने देखा कि घर के बाहर कुछ चूहे घूम रहे हैं। मीकू ने बाहर जाकर देखा तो वह दंग रह गया। वे उसी के साथी थे। मीकू ने सबको बुलाया तथा भरपेट खाना खिलाया। अब सब मिलकर रहने लगे।

❑ मनीष कौशिक, आठवीं, चंडीगढ़

मीकू फंसा प्रयोगशाला में

प्रयोगशाला में मीकू मास्टर जी की जेब से कूदा और जान बचाने के लिए भागा। उसे डर था कि कहीं मास्टर जी उसे पकड़कर चीराफाड़ी न कर दें। मास्टर जी तो उसे देखकर हंस दिए और बाहर चले गए। बाहर जाकर उन्होंने प्रयोगशाला का दरवाज़ा बंदकर ताला लगा दिया।

दरवाज़ा बंद होते ही मीकू बाहर की तरफ भागा। मगर अब क्या हो सकता था, निकलने के लिए ज़रा भी सांस नहीं थी।

उसने सोचा पिछली बार तो बच गया था मगर यदि यहां से बाहर न निकल सका तो यहीं 'राम नाम सत्य' हो जाएगा। मीकू ने चारों ओर देखा, कहीं से भी निकलने के लिए जगह नहीं थी। मीकू उछलकर एक टेबिल पर चढ़ गया। जिस पर एक डिब्बे में वही क़ैंची रखी थी जो मास्टर जी ने उसके पेट पर रखी थी, तथा चीराफाड़ी का अन्य सामान भी था।

डरकर मीकू आगे भागा। अचानक वह किसी चीज़ से टकराया। उसने नज़रें उठाकर देखा तो ऊपर एक सांप बैठा था। उसे देखकर मीकू की चीख़ निकल गई। मीकू वहां से भागा। उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उससे टकराने के बाद भी सांप वैसा ही बैठा रहा, ज़रा भी नहीं हिला। दरअसल मीकू जीव-विज्ञान की प्रयोगशाला में घुस गया था और वह मरा हुआ सांप था जो कि कांच के बर्तन में बंद था।

मीकू टेबिल से नीचे कूदा तो उसे एक दरवाज़ा मिला, जिसमें एक छोटा-सा छेद था। मीकू फ़ौरन उसमें से निकल गया। उसने सोचा वह बाहर निकल गया लेकिन इस बार वह रसायन शास्त्र की प्रयोगशाला में आ गया था। वह यहां-वहां उछलने लगा। तभी एक कांच की बोतल से टकरा गया। जिसमें कोई द्रव भरा हुआ था। टक्कर से वह बोतल गिर पड़ी। जिस चीज़ पर बोतल गिरी वह गल गई। मीकू ने सोचा, 'यह बोतल मेरे ऊपर गिरती तो मैं भी गल जाता।'

मीकू आगे चला तो किसी गोल चीज़ से टकरा गया। यह एक दूरबीन थी जो कि एक खिड़की के सामने रखी थी। खिड़की के सामने एक घर में एक बिल्ली बैठी थी। मीकू को दूरबीन से वह बिल्ली काफ़ी नज़दीक दिखी। उससे डरकर मीकू भागा और दूसरी खिड़की के पास पहुंचा, जो कि कांच के शीशे से बंद थी। मीकू को कांच दिखाई नहीं दिया। उसने सोचा, कोई दरवाज़ा है।

मीकू उछलकर भागा तो टकराकर नीचे गिर पड़ा। उसने सोचा, 'अजीब बात है! मैं बाहर देख सकता हूं लेकिन जा नहीं सकता।'

इन सब से तंग आकर वह पुनः जीव-विज्ञान की प्रयोगशाला में गया और एक अलमारी के ऊपर चढ़ कर सो गया।

सुबह खट-पट की आवाज़ सुनकर उसकी नींद खुली। उसने नीचे देखा, कुछ लड़के एक मेंढ़क को पकड़कर ला रहे हैं। उन्होंने मेंढ़क को दवा सुंघा कर बेहोश कर दिया और एक तख़्ते पर रख कर उसके हाथ-पैरों में कीलें ठोंक दी। फिर चाकू से उसके पेट को चीर दिया। 'इन लोगों ने इस जीवित प्राणी की हत्या क्यों की।' मीकू ने सोचा। तभी मीकू का पैर फिसला और वह नीचे रखी बाल्टी में गिरा जिसमें गंदा पानी भरा था।

मीकू ने सोचा, 'अब तो मरना ही है।'

मीकू बेहोश हो गया। लड़कों ने उस ओर ध्यान नहीं दिया। एक लड़के ने बाल्टी उठाई और गंदे पानी को पीछे एक नाली में फैंक दिया। गिरते ही मीकू को होश आ गया। खुला आसमान देख वह नाचने लगा और नाली में से भागकर एक घर में घुस गया।

वहां उसे नई मुसीबत का सामना करना पड़ा। घर में एक चूहों का बिल था, मीकू उसमें घुस गया। वहां बड़े-बड़े चूहे थे। मीकू को बिल में घुसा देखकर उन्होंने उसे दबोच लिया और मारने लगे।

मीकू ने उन्हें समझाया, "मैं अपने साथियों से बिछुड़ गया हूं। कृपया मुझे अपने घर में एक-दो दिन तक शरण देने की कृपा करें तब तक मैं उन्हें ढूंढ़ लूंगा।" चूहों ने एक-दो दिन के लिए उसे शरण दे दी।

मगर मीकू के सामने फिर एक प्रश्न था। इसके बाद वह कहां जाएगा? क्या करेगा?

❑ दीपक कुमार खरे, महाराजपुर, छतरपुर



एक बासाब

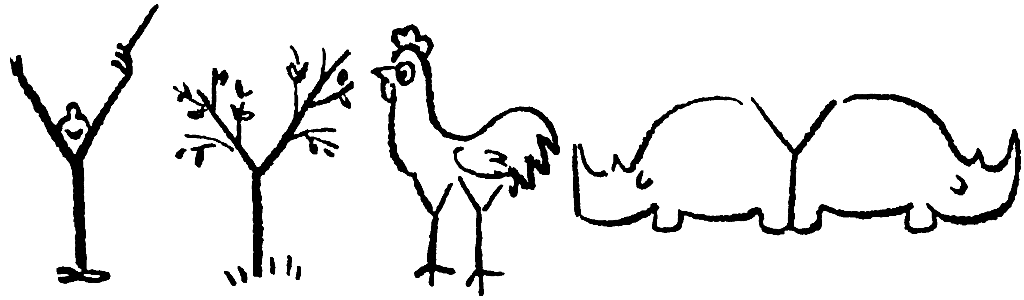
एक बासाब थे उनको सायकिल चलाना नहीं आती थी। एक दिन उन्होंने सोचा कि सायकिल चलाना सीखूं। धीरे-धीरे उनको सायकिल चलाना आ गया। एक दिन एक किलोमीटर गए, फिर दो किलोमीटर गए, फिर बासाब दस किलोमीटर तक चले गए। पर उनको उतरना नहीं आता था।

एक दिन एक शहर में जा रहे थे। वे उतरने लगे तो एक गटर में जा गिरे। दो-चार आदमी आ रहे थे। उन्होंने कहा, "बासाब, ठीक से उतरना चाहिए।" उनको उठाया।

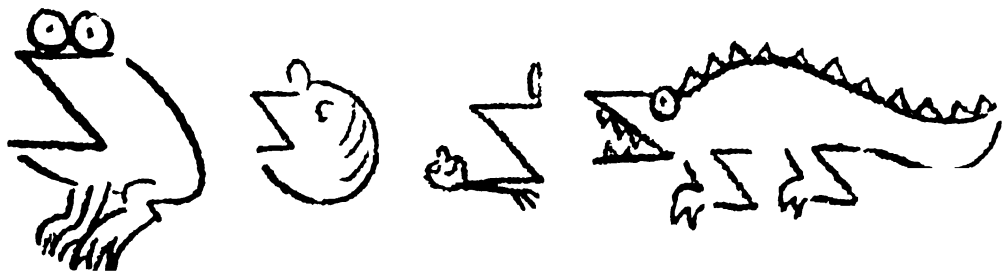
उन्होंने कहा, "कि मेरे उतरने का ढंग ही ऐसा है तो मैं क्या करूं?"

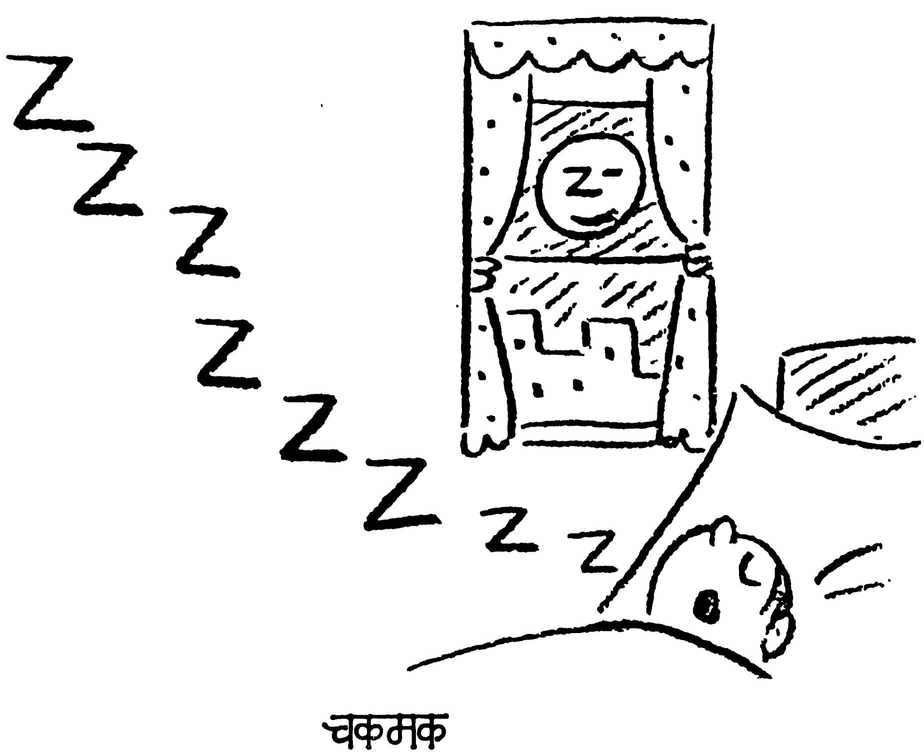
❑ मुकेश पाटीदार, मंदसौर

तुम भी बनाओ

Y 

y 

Z 

z 



किरनों के संग खेलें!

चलो चलें खेलेंगे
जो भी मिला राह में अपनी
साथ उसे ले लेंगे!

क्या खेलेंगे!
हमें क्या पता
जो सूझा खेलेंगे!

सूरज हुआ अगर ऊपर तो
पेड़ों में छुपकर के
उसे चुनौती देंगे छू लो
किरनें दौड़ाकर के

किरनें जैसे ही छूने को
आसमान से उतरें
गिलहरियां दौड़ें पेड़ों पर
आती किरनें कुतरें



भाग खड़ी होंगी ऊपर को
आएंगी फिर नीचे
गिलहरियों से बच
पत्तों से छन के नीचे-नीचे

घुस जाएंगे तुरत
पेड़ की कोटर में हम सारे
धीरे-धीरे बुझ जाएंगे
सूरज के अंगारे

चली जाएंगी किरनें
हंसती हुई खीझ के मारे
चांद खिलेगा छिटक जाएंगे
तारे तारे तारे
सो जाएंगे हम घर जाकर
खिड़की पास उघारे

हम समझेंगे खेल ख़तम है
लेकिन किरनें आकर
सुबह हमें छू लेंगी

सूरज
हमें दिखेगा हंसता ऊपर
ताली बजा-बजा कर!

❑ नवीन सागर

चित्र : आशा शर्मा

अमेरिका किसने खोजा ?

ख़त्म होती बीसवीं शताब्दी का एक और साल शुरू हो गया है। दुनिया भर को इस साल से तमाम उम्मीदें हैं। किस बात के लिए जाना जाएगा यह साल? तबाही मचाने वाली बाढ़, भूकंप, युद्ध या फिर किसी कारखाने से रिसने वाली गैस या ऐसी ही तमाम घटनाओं-दुर्घटनाओं के लिए? पता नहीं! लेकिन अतीत की एक ऐसी घटना का ज़िक्र इस साल यक़ीनन होगा और ज़ोर-शोर से होगा, जो आज से पांच सौ साल पहले घटी थी। यह घटना है अमेरिका की खोज! तुमने अपनी भूगोल की किताबों में कोलम्बस के बारे में ज़रूर पढ़ा होगा। कोलम्बस ने 1492 में एक समुद्री यात्रा की थी। 1992 के इस साल में इस यात्रा के पांच सौ साल पूरे हो रहे हैं।

आख़िर इस यात्रा को इतना महत्व क्यों दिया जा रहा है? एक कारण यह है कि आम धारणा के अनुसार **'अमेरिका महाद्वीप'** इसी यात्रा के दौरान खोजा गया था और 1492 के पहले यूरोपीय लोग इस महाद्वीप के बारे में कुछ नहीं जानते थे। इसी कारण से इस घटना को **'नई दुनिया की खोज'** के नाम से भी पुकारा जाता है। दूसरा कारण यह है कि इन पांच सौ वर्षों में अमेरिका दुनिया का न केवल संपन्न, बल्कि एक शक्तिशाली और डरावना देश बन गया है। ज़ाहिर है कि अमेरिका अपनी पांच सौवीं सालगिरह धूमधाम से मनाएगा।

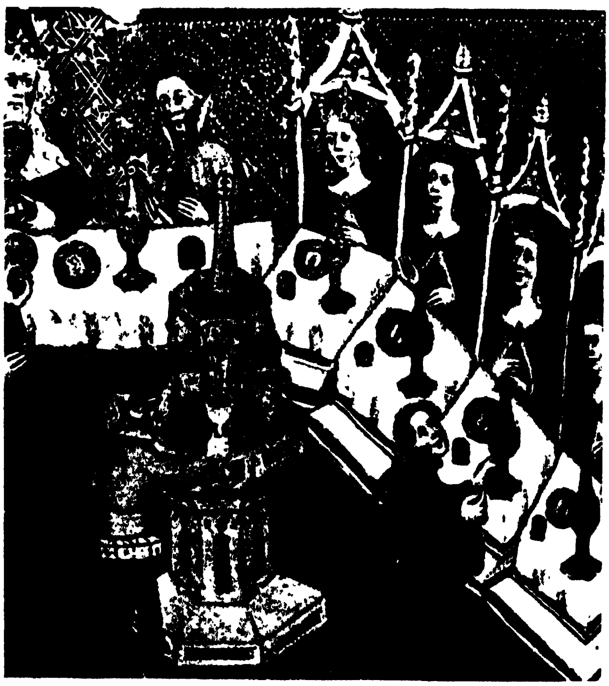
ख़ैर, यह बात तो अब जग-ज़ाहिर है कि कोलम्बस से पहले भी बहुत सारे लोग इस महाद्वीप के बारे में जानते थे। यही नहीं, इस ज़मीन पर कोलम्बस के पांव पड़ने के हज़ारों साल पहले से अनेकों मूलनिवासी रह रहे थे। तो फिर 'नई दुनिया की खोज' का क्या मतलब है? आओ इस बार इस नई बनाम पुरानी दुनिया की कहानी सुनते हैं। शुरूआत करते हैं कोलम्बस की रोचक यात्रा से।

चला कोलम्बस, इंडिया खोजने

कोलम्बस की यात्रा में मज़ा तभी आएगा, जब हम पंद्रहवीं शताब्दी की दुनिया के बारे में थोड़ा-बहुत जानते हों।

यह वह समय था जब एशिया के चीन, भारत (इंडिया) व अरब देशों की जानकारी यूरोप में पहुंच चुकी थी। मार्को पोलो नामक एक अन्य यात्री भूमि के रास्ते से एशिया पहुंच चुका था। उसने अपनी यात्रा के विवरण में एशिया में सोना, चांदी व अन्य क़ीमती चीज़ें पाए जाने का वर्णन किया था।

यह वह समय भी था जब यूरोप में तरक़्क़ी हो रही थी । इस तरक़्क़ी की कुछ ज़रूरतें भी थी। इनमें प्रमुख थी, कुछ क़ीमती धातुएं (जैसे सोना,



इंडीज़ की शानो-शौक़त की प्रसिद्धी ऐसे चित्रों से फैली। यह चित्र मार्को पोलो की किताब में था। चित्र में कुबलीखान नाम के किसी व्यक्ति की सालगिरह की पार्टी का दृश्य दिखाया गया है।

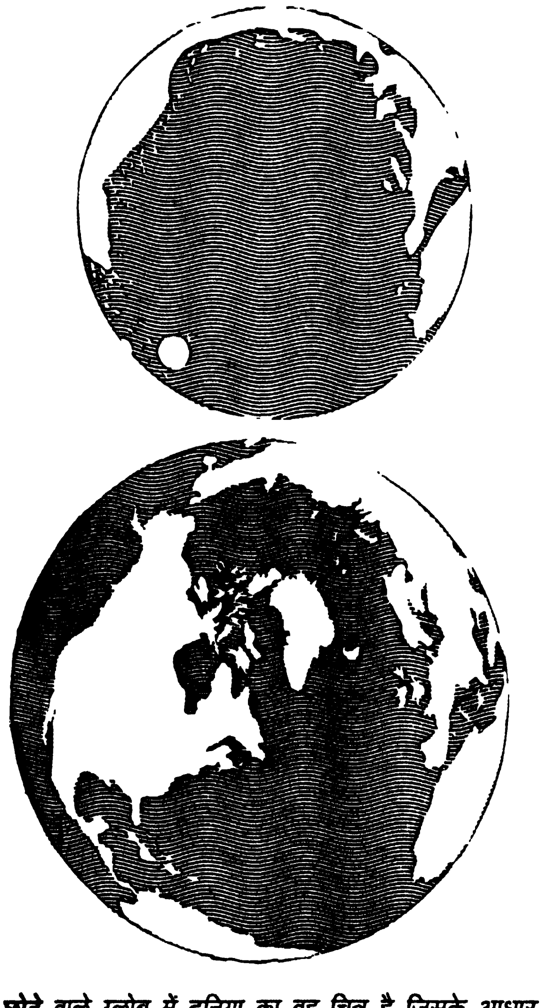
चांदी) और मसाले। मसाले शब्द पढ़कर शायद तुम कुछ चौंके होओगे। यह तो समझ आया कि सोने-चांदी के तो सिक्के बनाए जाते होंगे। लेकिन भला मसालों का क्या करते होंगे? वास्तव में मसालों की ज़रूरत आज जैसी नही थी। आजकल तो मसालों का इस्तेमाल खाने को लज़ीज़ बनाने के लिए किया जाता है। लेकिन पंद्रहवीं शताब्दी की दुनिया में मसाले का महत्व थोड़ा अलग था। यूरोप आदि में गोश्त भोजन का एक प्रमुख और बड़ा हिस्सा रहा है। चूंकि उस समय यातायात के साधन बहुत अधिक नहीं थे न ही फ्रिज जैसी कोई व्यवस्था थी, इस वजह से गोश्त को ख़राब होने से बचाने के लिए नमक आदि में रखना पड़ता था। मसाले, गोश्त को खाने लायक़ बनाने में मदद करते थे। गोश्त को लज़ीज़ बनाना पहली प्राथमिकता नहीं थी।

इन सब कारणों की वजह से यूरोप की सरकारें भी दूर-दराज़ के अनजान इलाक़ों को खोजने के लिए की जाने वाली यात्राओं, समुद्री यात्राओं को सहायता प्रदान करने लगीं। इसके पहले ऐसी यात्राएं आमतौर पर व्यक्तिगत रूप से की जाती थीं।

एक उल्लेखनीय बात यह भी है कि उस ज़माने में चीन, भारत व अरब के लोग भी काफ़ी उन्नत थे। लेकिन लंबी-लंबी समुद्री यात्राओं पर यूरोप के लोग ही जाते थे और वे सफल भी हुए, क्यों? कारण छुपा है जहाज़ की बनावट में। अरबी, चीनी व भारतीय जहाज़ों को चलाने के लिए अधिक लोगों की ज़रूरत पड़ती थी। अब अधिक लोग हों तो, लंबी यात्रा में उनके लिए भोजन और पानी की व्यवस्था भी अधिक करनी पड़ती। यूरोप के जहाज़ों में जो पाल लगते थे वे इन एशियाई देशों के पालों से भिन्न थे। यूरोप के जहाज़ों में कम लोगों की ज़रूरत होती थी। दूसरी बात यह कि जहाज़ पर लगे और लदे साजो-सामान को वापस सुरक्षित लाना ज़रूरी था। लेकिन उस समय समुद्री डाकुओं का आतंक था। यूरोपीय जहाज़ों में आगे-पीछे व बीच



__जब__ पुर्तगाली सन् 1520 के आसपास भारत पहुंचे तो उन्होंने मालाबार समुद्र तट पर इस तरह की भारतीय नावें देखीं। भारतीय आमतौर पर लंबी समुद्री यात्राएं नहीं करते थे। दूर-दराज़ का माल अरब देशों के निवासी अपनी 'ढो' नौकाओं से भारत पहुंचाते या ले जाते थे।



__छोटे__ वाले ग्लोब में दुनिया का वह चित्र है जिसके आधार पर कोलम्बस ने अपनी यात्रा की। इसमें यूरोप व एशिया के बीच केवल सागर (रेखाओं वाला हिस्सा) दिखाया गया है। बड़े वाले ग्लोब में आज की वास्तविक दुनिया दिखाई गई है। इस ग्लोब में सागर के बीचों-बीच अमेरिका (कोलम्बस की नई दुनिया) है।

में तोपें लगी रहती थीं। इस वजह से उनको लूटना आसान नहीं था।

समुद्री यात्रा की एक और ज़रूरत थी- नक्शे व दिशा बताने वाले यंत्र। जहां तक उस समय उपलब्ध नक्शों का सवाल है, वे वास्तविकता से काफ़ी दूर थे। उनमें यूरोप, अफ्रीका व एशिया दिखाए तो जाते थे, लेकिन उनका आकार, वास्तविक आकार से मेल नहीं खाता था। उस समय यह अंदाज़ था कि पश्चिम की ओर यूरोप व एशिया के बीच सागर ही सागर है। हां, उस समय के दिशा मापी यंत्र काफ़ी विकसित थे। दिशा पता करने के

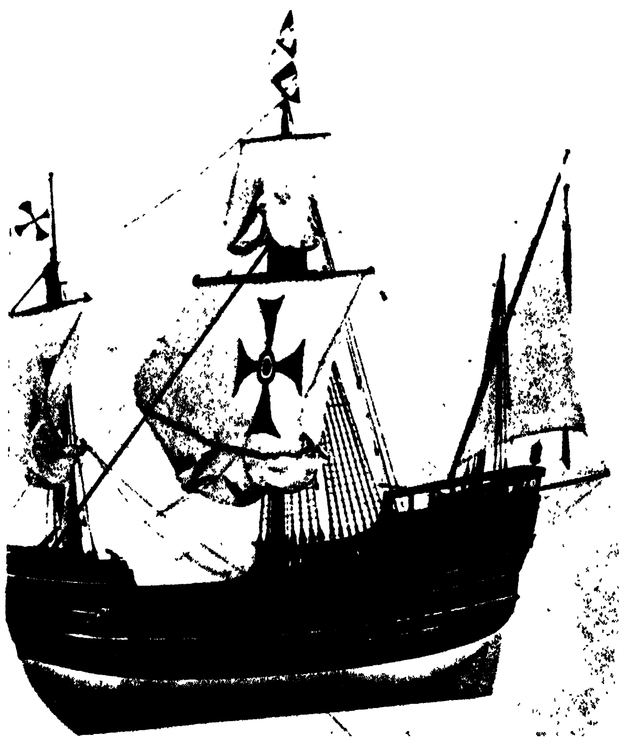


दिशा और समय बताने वाले अस्ट्रोलेब यंत्र

लिए अस्ट्रोलेब का उपयोग किया जाता था, जो तारों की स्थिति के आधार पर दिशा व समय दोनों बताता था।

कोलम्बस की भी यही धारणा थी कि यूरोप व एशिया के बीच सागर है, ज़मीन का नामों-निशान नहीं है। कोलम्बस उस समय सत्ताइस-अट्ठाइस साल का था। इस छोटी-सी उम्र में ही उसने जहाज़रानी का काफ़ी अनुभव प्राप्त कर लिया था। उसके पिता उत्तरी इटली में एक बुनकर थे, वहीं कोलम्बस का जन्म हुआ था। लेकिन कोलम्बस की ज़िंदगी का उद्देश्य था, समुद्री रास्ते से **'इंडीज़'** पहुंचना। 'इंडीज़' शब्द उस समय एशिया महाद्वीप के लिए इस्तेमाल किया जाता था। कोलम्बस ने उस समय के एक शौक़िया भूगोलशास्त्री पॉवलो टोस्कानेली से सलाह की। पॉवलो ने बताया कि चीन, यूरोप से कुल 5000 समुद्री मील दूर है। कोलम्बस ने ऐसे बहुत सारे अनुमानों में से 3500 मील की दूरी को अपना आधार बनाया (वास्तविक दूरी 11,766 मील है)।

लगभग दस साल तक कोलम्बस इंडीज़ यात्रा करने के लिए सहायता व समर्थन ढूंढ़ता रहा। वह पुर्तगाल गया। वहां के राजा से मिला, पर उसने मना कर दिया। उसने इंग्लैंड के राजा हेनरी को भी लिखा, पर वहां भी सफलता नहीं मिली। फिर उसने अपनी योजना स्पेन के राजा फर्नीनेण्ड और महारानी ईसाबेला के सामने रखी। दो-तीन वर्षों की लंबी बातचीत के बाद उन्होंने यात्रा के लिए सहायता देना स्वीकार किया।



सांतामारिया जहाज़ का मॉडल। कोलम्बस ने इसी में यात्रा की थी। इसका वज़न 100 टन था और 40 नाविक मिलकर इसे चलाते थे।

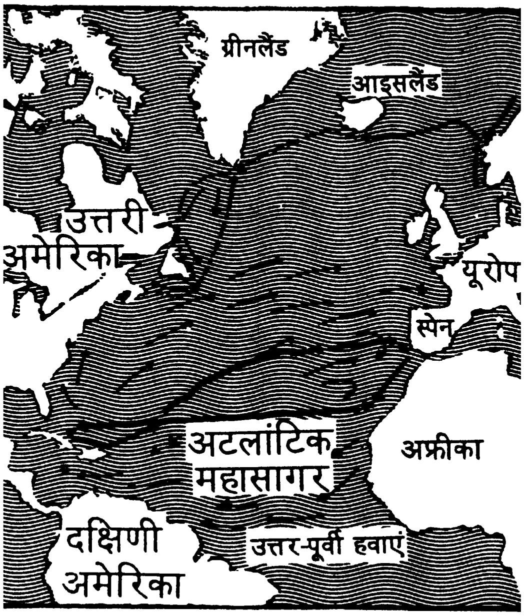
कोलम्बस ने यात्रा के लिए तीन जहाज़ चुने, जिनके नाम **थे-नाइना, पिन्ता** और **सांतामारिया**। लगभग दस महीनों की तैयारी के बाद 3 अगस्त, 1492 की सुबह जहाज़ यात्रा पर निकल पड़े। कोलम्बस ख़ुद सांतामारिया में सवार हुआ और बाक़ी दो जहाज़ों में अन्य लोग। हवा ने उनका साथ दिया। एक दिन जहाज़ों ने 24 घंटों में 182 मील का फ़ासला तय किया जो उस समय बहुत अच्छी रफ़्तार मानी जाती थी।

चलते-चलते तीस दिन गुज़र गए। सांतामारिया के नाविक घबरा गए थे। उन्होंने कभी बिना रूके इतना लंबा सफ़र नहीं किया था। उन्होंने कोलम्बस से कहा कि जहाज़ मोड़ लिया जाए। भूमि तो कहीं दिखाई नहीं दे रही है। कोलम्बस ने दो-तीन दिन की मोहलत और मांगी और कहा कि अगर अब भूमि नहीं दिखाई दी, तो जहाज़ को वापस मोड़ लेंगे।

संयोग से दो दिन बाद 12 अक्टूबर, 1492 की चांदनी रात में क़रीब दो बजे भूमि दिखाई दी। उस भूमि को आज बहामा द्वीप के नाम से जाना जाता है। कोलम्बस और उसके साथी पहले यूरोपीय थे, जिन्होंने **बहामा द्वीप** पर क़दम रखा। बहामा द्वीप वास्तव में केरिबियन द्वीप समूह का एक हिस्सा है। इन द्वीपों को आजकल **वेस्ट इंडीज़** के नाम से भी जाना जाता है। वेस्ट इंडीज़ का नाम तो तुम सुनते-पढ़ते ही रहते होगे- क्रिकेट की वजह से। वेस्ट इंडीज़ नाम भी कोलम्बस ने ही दिया। हुआ यूं कि कोलम्बस के दल को एक द्वीप पर, जब पहली बार वहां के निवासी मिले, तो उन्होंने उसका स्वागत दोस्तों की तरह किया और नज़राने में सोने के छोटे-छोटे ज़ेवर दिए। कोलम्बस के दिमाग़ में था कि इंडिया में सोना बहुत अधिक



***कोलम्बस** व उसके दो साथियों को हिस्पान्यूला द्वीप पर वहां के मूलनिवासी सोना व ज़ेवर भेंट कर रहे हैं। इन्हीं की तलाश में तो वह वास्तव में निकला था।*



***कोलम्बस** की यात्रा का मार्ग बताने वाला चित्र। मोटी लाइनों और तीर से समुद्र में हवा की दिशा दर्शाई गई है। संयोगवश कोलम्बस ने जाने और वापिस आने का सही रास्ता चुना। यह ध्यान रखने की बात है कि उसके जहाज़ पाल से चलते थे, जिनके लिए हवा की सही दिशा बहुत ज़रूरी है।*

मिलता है, तो उसने सोचा कि वह सचमुच इंडिया पहुंच गया है। चूंकि यह द्वीप यूरोप के पश्चिम में था इसीलिए इस हिस्से का वेस्ट (पश्चिम) इंडीज़ नाम पड़ा। हालांकि, इंडिया तो वह कभी पहुंचा ही नहीं। वास्तव में कोलम्बस अमेरिका महाद्वीप के पास के एक द्वीप समूह पर पहुंचा था।

लगभग तीन महीने तक वह इस द्वीप समूह में घूमता रहा। इसी दौरान उसने क्यूबा तथा हिस्पान्यूला द्वीपों को भी खोजा। हिस्पान्यूला में उसे फिर सोना दिखाई दिया। क्यूबा को वह चीन समझ बैठा। लेकिन मार्को पोलो ने अपने यात्रा विवरण में जिस मात्रा में सोना, चांदी तथा रेशम आदि मिलने की बात लिखी थी, वैसा कोलम्बस को कुछ नहीं मिला। यात्रा के आख़िरी क्षणों में सांतामारिया छिछले पानी में डूब गया। बाद में उसकी लकड़ी निकालकर उससे घर बनाए गए। इन घरों का इस्तेमाल उन व्यक्तियों ने किया जो, कोलम्बस के साथ आए थे और वहीं रह गए।

इस प्रकार तथाकथित नई दुनिया पर यूरोप का पहला कुनबा जा बसा। कोलम्बस बाक़ी दो जहाज़ों को लेकर स्पेन लौट आया। उसकी यात्रा की ख़बर पूरे यूरोप में फैल गई। सब जान गए कि पश्चिम में यूरोप और एशिया के बीच एक और महाद्वीप है। बस फिर क्या था, अंग्रेज़ी, फ्रांसीसी, स्पेनी व पुर्तगाली जहाज़ी बेड़े सभी इस नई दुनिया पर कब्जा करने के लिए निकल पड़े। ख़ुद कोलम्बस ने 1492 के बाद तीन और यात्राएं कीं। उसके बाद तो वहां अलग-अलग देशों के लोगों के पहुंचने का तांता लग गया। और इस तरह शुरू हुई आज के अमेरिका की पांच सौ साल पुरानी कहानी।

इस कहानी के साथ दुनिया के इतिहास का एक महत्वपूर्ण दौर जुड़ा है। कोलम्बस की इस यात्रा ने यूरोप के कई देशों को प्रभावित किया। मसलन 1497 में वास्को-डी-गामा समुद्री रास्ते से भारत पहुंचा।

इस यात्रा ने ही यूरोपीय देशों के लिए रास्ते खोले, अन्य देशों पर साम्राज्य जमाने के। एक-एक करके अफ्रीका, एशिया, उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका में फ्रांस, इंग्लैंड, पुर्तगाल, स्पेन व डच साम्राज्य फैला, भारत भी इसका शिकार बना।

एक तरह से कोलम्बस की यात्रा तथाकथित नई दुनिया की खोज का ही नहीं, बल्कि विश्व भर में कुछ यूरोपीय देशों द्वारा अपना साम्राज्य फैलाकर लूटपाट करने का भी सूचक है।

पांच सौ साल पहले भी था अमेरिका

अब तक यह बात तो साफ़ हो ही गई होगी कि 'नई दुनिया की खोज' महज़ यूरोप के लोगों तक ही सीमित थी। वास्तव में इस 'नई दुनिया' में हज़ारों वर्ष पहले से लोग रह रहे थे। लेकिन इनके बारे में यूरोप के तमाम देश नहीं जानते थे।

इस बात के सबूत भी मिलते हैं कि कोलम्बस संभवतः अमेरिका पहुंचने वाला पहला नाविक नहीं था। उससे पहले बाहरवीं तथा तेरहवीं शताब्दी में नार्वे के नाविक शायद उत्तरी केनेडा तक पहुंच गए थे। इस बात को भी यूरोप वाले नहीं

जानते थे। इन नाविकों ने ही लैंड व ग्रीनलैंड द्वीप खोजे थे।

एक मज़ेदार बात यह भी है कि उपलब्ध तथ्यों से पता चलता है कि प्राचीन काल में अमेरिका में बाहरी लोगों का प्रवेश भूमि के रास्ते से हुआ था। लेकिन विश्व का नक्शा देखोगे तो उसमें अमेरिका के चारों ओर समुद्र है। तुम सोचोगे भला फिर ऐसा कैसे हुआ होगा? नक्शे को ध्यान से देखो। यह समुद्र ऊपर उत्तर में एक जगह पर एशिया व अमेरिका के बीच बहुत ही संकरा है जिसे बेरिंग स्ट्रेट (या बेरिंग जलसंधि) कहते हैं। हज़ारों वर्ष पहले पृथ्वी का औसत तापमान आज से काफ़ी कम था। इस वजह से पृथ्वी का उत्तरी हिस्सा लगभग जमा हुआ था। इसमें बेरिंग स्ट्रेट का इस्तेमाल एशिया व अमेरिका के बीच आवागमन के लिए किया जा सकता था। यहीं से एशियावासियों का प्रवेश अमेरिका में हुआ तथा साईबीरिया से अलास्का में, और वे केवल उत्तरी ही नहीं दक्षिण अमेरिका तक पहुंच गए। पर इस बात की जानकारी यूरोप के देशों में नहीं थी। इतना ही नहीं, इस बात के प्रमाण भी मिलते हैं कि मध्यकाल में जब जमी हुई बर्फ़ पिघल गई तो बेरिंग स्ट्रेट पर पैदल चलना संभव नहीं रहा, तब एशियावासी नौकाओं द्वारा दुबारा इस संकीर्ण समुद्र को पार करके इस जगह पर पहुंचे थे। उत्तरी अमेरिका के एस्कीमो जाति के पूर्वज इन्हीं एशियावासी (मंगोल वंश) को माना जाता है।

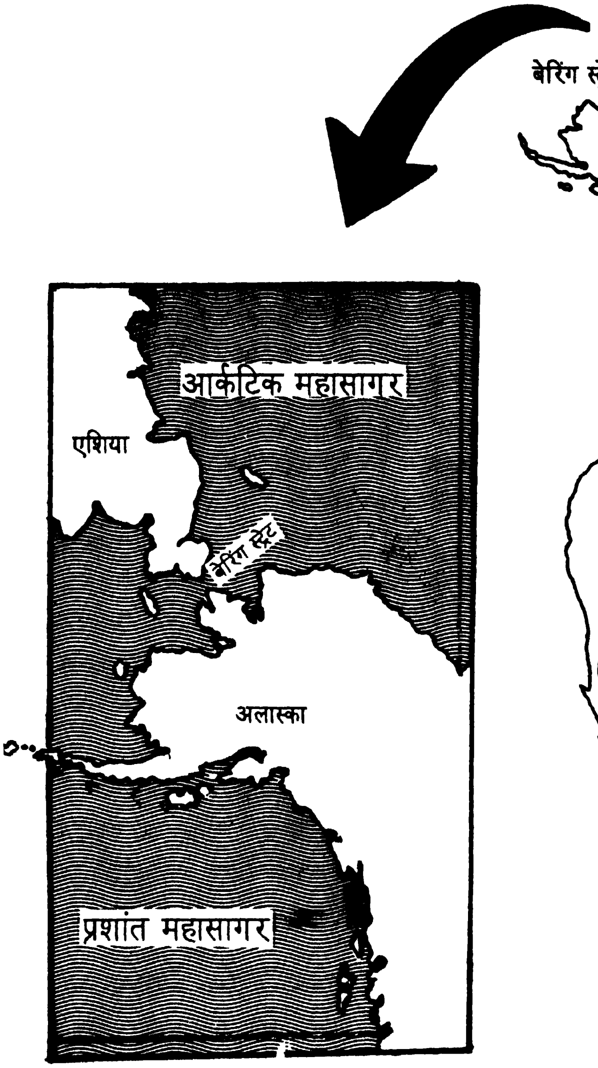
कोलम्बस की यात्रा के बीस साल बाद तक 'नई दुनिया' में कुछ ख़ास नहीं मिला। कोलम्बस ने

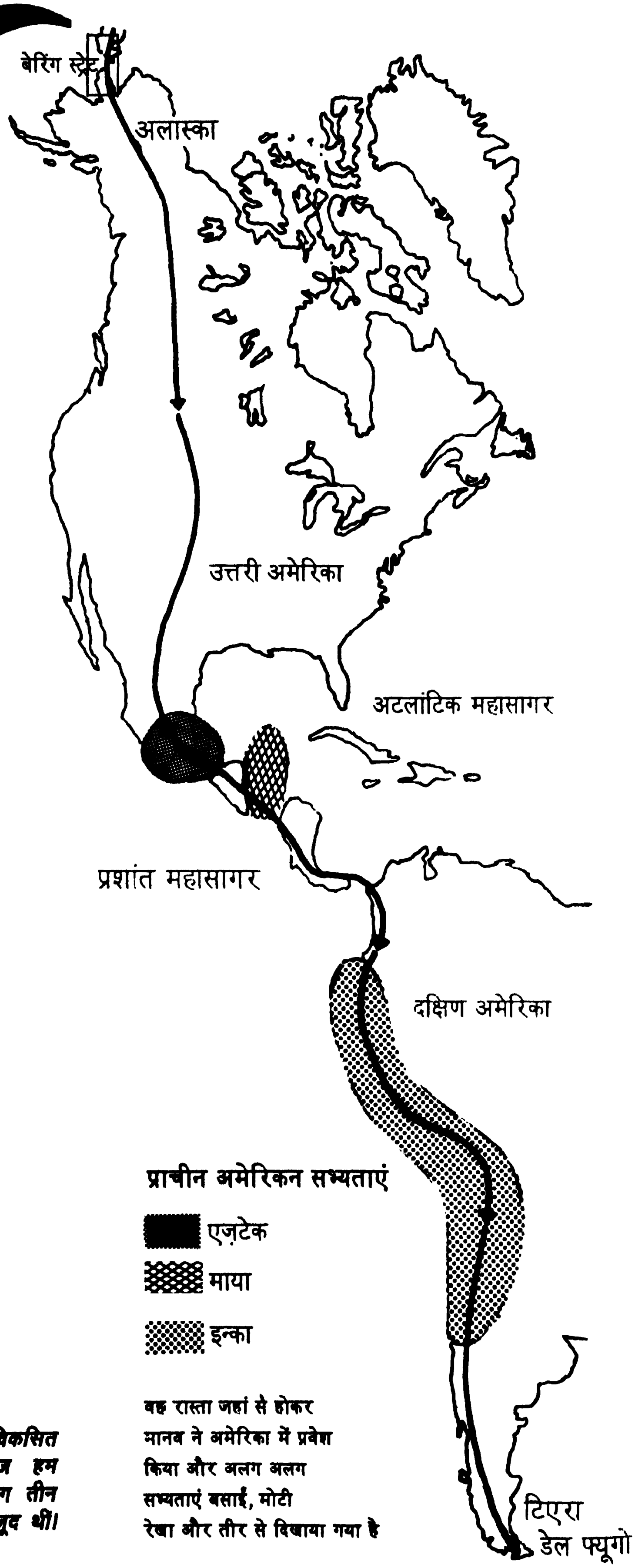
ऐसे पड़ा अमेरिका नाम!

***अमेरिका** नाम पड़ने के पीछे भी एक कहानी है। जब यह पता चला कि कोलम्बस जहां पहुंचा वह एशिया नहीं है, बल्कि एक नई जगह है, तो एक इतावली भूगोलशास्त्री अमेरिगो वेसपुची ने इस जगह के बारे में और खोजबीन की। वह 1499 में ब्राजील के तट पर पहुंचा और अगले तीन-चार साल तक इस नई जगह का अध्ययन करता रहा। सन् 1504 में जारी अपने निष्कर्ष में उसने कहा कि, 'यह भूमि एक नया महाद्वीप है- इसे नई दुनिया कहना उचित होगा।' जर्मनी के एक प्रकाशक ने इस नए महाद्वीप को अमेरिगो के नाम से ही प्रचलित कर दिया। प्रकाशक ने 1507 में दुनिया का नक्शा प्रकाशित किया, जिसमें इस जगह को अमेरिका कहा गया। वास्तव में यह दक्षिणी भाग था, जहां अमेरिगो से पहले कोलम्बस पहुंचा था। जब बाद में यह पता चला कि उत्तरी व दक्षिणी भाग आपस में जुड़े हैं, तो पूरे क्षेत्र को अमेरिका कहा जाने लगा।*



***पंद्रहवीं** शताब्दी तक यूरोप मे दूर-दराज़ के देशो के निवासियो के बारे मे कैसी ऊलजलूल धारणाएं थीं, यह इस चित्र में दिखाया गया है। एक का सिर उसकी छाती में है। एक का पांव इतना बड़ा है कि छतरी की तरह इस्तेमाल हो सके और तीसरे की एक ही आंख है। दंत-कथाओं में इन लोगों को एशियावासी कहा जाता था। आज भी यूरोप व अमेरिका में भारत को सपेरों व जादूगरों का देश माना जाता है।*





एज़्टेक, इन्का तथा माया तीन ऐसी विकसित सभ्यताएं थीं, जिनके अवशेष देखकर आज हम आश्चर्यचकित रह जाते हैं। ये सभ्यताएं लगभग तीन हज़ार वर्ष पूर्व पूर्ण रूप से विकसित रूप में मौजूद थीं। इनके बारे में कभी अलग से चर्चा करेंगे।



मकाह नस्ल के मूलनिवासी अमेरिका में यूरोपीय लोगो के पहुचने के वर्षों पहले से रह रहे थे। वे मोटे तने वाले पेड़ों से इस प्रकार लकड़ी के पटिए निकालते थे। इससे तने को अधिक नुकसान नहीं पहुंचता था, और वह फिर से वृद्धि करके मोटा हो जाता था।

स्पेन के राजा और रानी को बहुत सारी उम्मीदें बंधाई थीं। उसने कहा था, "मैं आप लोगों को इतना सोना दूंगा, जितना आप चाहेंगे। उतने ग़ुलाम ले आऊंगा, जितने आप हुक्म करेंगे। साथ में हज़ारों अन्य मूल्यवान चीज़ें।" लेकिन कुछ भी नहीं मिला।

कोलम्बस की अंतिम यात्रा (1502) के कुछ वर्षो बाद क्यूबा के क़रीब एज़टेक (मेक्सिको) को खोजा गया। उसे देखकर स्पेन वालों की आंखें चकाचौंध हो गईं। एज़टेक के एक शहर में तीन लाख की आबादी थी। नहरें थीं, बाज़ार थे, नाई थे, पार्क थे और एक चिड़ियाघर भी था।

बाद में ऐसे दर्ज़नों शहर खोजे गए, जो एक प्राचीन व विकसित सभ्यता का प्रमाण थे। धन-धान्य से भरपूर। इसी की तलाश में तो निकले

थे यूरोप के लोग। और फिर शुरू हुआ लूटपाट का ऐसा दौर जिसकी मिसाल सारी दुनिया में नहीं मिलती। स्पेनवासियों ने कई साल तक इस क्षेत्र को लूटा और वहां के मूलनिवासियों का सर्वनाश किया।

इस सर्वनाश का विवरण फ़ादर बार्तोलोमे दे लास केसिस की किताबों में मिलता है। फ़ादर बार्तोलोमे एक पादरी थे और कोलम्बस के दल में शामिल थे। वे कई वर्षों तक वहां के हालात के चश्मदीद गवाह रहे। उन्होंने हिस्पान्यूला के मूलनिवासियों की स्पेन के लोगों द्वारा की गई हत्या के बारे में लिखा है-

''इन लोगों पर स्पेनवासी ऐसे टूट पड़े, जैसे भेड़-बकरियों पर शेर टूट पड़ता है। चालीस वर्षों में हिस्पान्यूला के मूलनिवासियों की आबादी तीस लाख से घटकर मात्र तीन सौ रह गई-यानि लगभग तीस लाख लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। यही हाल आसपास के अन्य द्वीपों जैसे क्यूबा, पोटीरिको और जमैका का हुआ। लगभग तीस अन्य द्वीपों पर तो एक भी मूलनिवासी ज़िंदा नहीं बचा। समुद्र से घिरे एक-एक राज्य का ख़ात्मा कर दिया गया और मूलनिवासियों की अनेक नस्लें पूरी तरह ख़त्म कर दी गईं। कुल मिलाकर स्पेनवासियों ने लगभग एक करोड़ बीस लाख मूलनिवासी इंडियनस् को मौत के घाट उतार दिया।''

फ़ादर आगे लिखते हैं -

''पीढ़ी-दर पीढ़ी, स्पेनवासी को इसी बात से सम्मान मिलता था कि उसने कितने हज़ार इंडियन को मौत के घाट उतारा था..!

....मैंने इनमें से बहुत-सी घटनाएं अपनी आंखों से देखी हैं....।''

यह हाल उत्तरी अमेरिका में भी हुआ जिस पर अंग्रेज़,फ्रांसीसी व पुर्तगालियों ने क़ब्ज़ा कर लिया। वहां के मूलनिवासी रेड इंडियनस् को नष्ट करके गोरी चमड़ी के लोग वहां फैल गए। एक रेड इंडियन चीफ़ के मुताबिक़-

''एक समय पर हम अपने देश में ख़ुशहाली से रहते थे। दो पांव व चार पांवों वालों के बीच बढ़िया समन्वय था। दोनों के लिए खाने की कोई कमी नहीं थी। लेकिन फिर यह वाज़िचू (गोरी चमड़ी के लोग) आए। मैं 1873 में दस साल का था, जब मैंने सबसे पहला वाज़िचू देखा। मुझे लगा वह बीमार है।

1883 के पतझड़ में इन वाज़िचूयों ने आख़िरी बायसन (अमेरिकी भैंसे) का झुंड भी मार गिराया। मुझे याद है कि एक ज़माने में इतने बायसन होते थे कि गिनना मुश्किल था। लेकिन इन वाज़िचूयों ने उन्हें मार डाला। वह उन्हें खाने के लिए नहीं मारते थे-वे उन्हें मारते थे, सींग व खाल के लिए। यक़ीनन ये लोग पागल थे।''

इन कारणों से रेड इंडियन भी इन गोरी चमड़ी के लोगों पर हमले करने लगे। जवाब में फौज भेजी जाती थी। सन् 1864 की एक घटना सेंड क्रीक पर गई फौज का लेफ्टिनेंट केमर बताता है-

''हम इंडियन गांव सुबह-सुबह पहुंचे। हमारे कर्नल ने पूरी रेजिमेंट गांव के सामने खड़ी कर दी। इंडियन लोग गांव के पीछे का नाला पार करके तट के पीछे छुपने लगे। उनका चीफ़ जिसका नाम व्हाईट अन्टेलोप था, हमारी तरफ अपनी दोनों बांह ऊपर उठाकर आया। लेकिन उसे तुरंत गोली मार दी गई। कई और नौ-जवानों को भी इसी तरह मारा गया। औरतें और बच्चे इकट्ठे बैठे हुए थे, रेजिमेंट की सारी बंदूकें उन पर गोलियां बरसाने लगीं। थोड़ी ही देर में मैंने देखा, कि लगभग एक सौ पचास इंडियन मरे पड़े हैं।

हमारी टुकड़ी इतनी बड़ी थी कि इंडियनस् पर गोली बरसाने की ज़रूरत नहीं थी। उन्होंने बहुत देर तक हमारी गोलियों का जवाब नहीं दिया। मैंने कर्नल से



स्पेनवासियों *व इडियनस् के बीच युद्ध। यूरोपीय लोगो के वहा पहुचने के बाद का ऐसे युद्धो का ही रहा है।*

कहा कि, 'अगर इन इंडियनस् पर गोली बरसाई गई तो यह क़त्लेआम होगा।' उसने मेरी आंखों के सामने मुट्ठी भींचकर कहा, 'जो कोई भी इंडियनस् से सहानुभूति रखता है उस पर लानत है।' वह इंडियन को मारने आया था और उसके विचार में किसी भी हालत में इंडियनस् को मारना सही था।"

आज ऐसे तमाम विवरण उपलब्ध हैं, जिनसे पता चलता है कि एक-एक करके रेड इंडियन कबीले नष्ट कर दिए गए।

पांच सौ बरस बाद-जश्न या बरसी?

तो 1992 में पांच सौ साल किस बात के पूरे हुए माने जाएं? 'नई दुनिया की खोज' के या पुरानी दुनिया के मूलनिवासियों के क़त्लेआम की शुरूआत के? या अफ्रीका, एशिया व अमेरिका पर चंद यूरोपीय देशों के दमनों-दहशत की शुरूआत के?

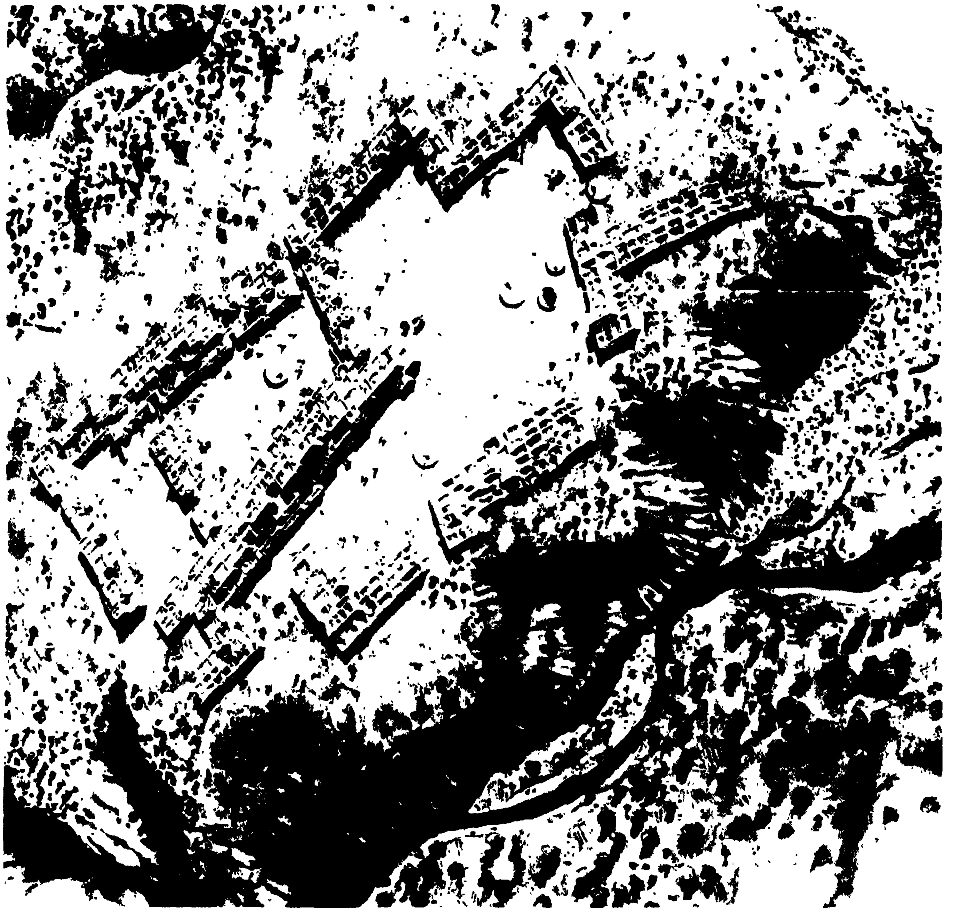
यह सवाल इस समय विश्व में बचे हुए मूलनिवासी व तीसरी दुनिया के तमाम लोग उठा रहे हैं। दक्षिणी अमेरिका के मूलनिवासियों ने मिलकर मांग की है, अमेरिका पांच सौ साल के नाम पर कोई जश्न न करे।

अफ्रीका के लोगों ने यह मांग की है कि इन पांच सौ वर्षों में जो लूटपाट अफ्रीका में अपना साम्राज्य फैलाने वालों ने की है, उसका मुआवज़ा दिया जाए। इसमें पर्यावरण को बिगाड़ने का मुआवज़ा शामिल है।

अब तुम भी तय करो कि कोलम्बस की यात्रा को तुम किस रूप में देखते हो?

❑ **विनोद रायना**

[इस लेख से संबंधित चित्र : नेशनल ज्योग्राफ़िक; डिस्कवरी एंड एक्सप्लोरेशन (मार्शल केविंडिश); एज ऑफ़ एक्सप्लोरेशन (जान आर. हाले); एनीसिंयेंट अमेरिका (जोनाथन नोर्दन लियोनार्ड); दी सेटलमेंट ऑफ़ दी अमेरिकन वेस्ट (जॉन सेंडलर) तथा दी न्यू वर्ल्ड (स्टीफन लोरां) से साभार]



पुरातत्व खोजों पर आधारित यह चित्र सन् 1350 के पोसी गांव का है। यह गांव आजकल के अमेरिका के अरिजीना प्रदेश में है।

प्राचीन अमेरिका की एक झलक



अमेरिका के मूलनिवासी मछली पकड़ते हुए। चित्र में कुछ लोग भाले से मछली मारते दिख रहे हैं। लेकिन उनके भाले लकड़ी के बने हैं। उनमें धातु का उपयोग नहीं किया गया है, क्योंकि उस समय तक उनका धातु से परिचय ही नहीं हुआ था।



इंडियनस् *के जीवन का आधार अमेरिकी जंगली भैंसे (बायसन) थे। भैंसे का शिकार घोडे पर बैठकर तीर–कमान व नेज़े (भाले) से किया जाता था।*



यूरोपीय *लोगो के व्यवहार से रेड इडियनस् का जीवन भी बदल गया था। मिकमेक नस्ल के इंडियन बदूको का इस्तेमाल करने लगे थे।*



स्पेनवासी *सोने के पीछे पागल थे। इस पागलपन में लाखों इंडियनस् क़त्ल कर दिए गए। इस चित्र में इंडियनस् बदला लेते दिखाए गए हैं। कुछ लोग एक स्पेनी के मुंह में पिघला हुआ सोना डाल रहे हैं और कह रहे हैं, 'सोना खाओ, सोना खाओ।'*



एक मूलनिवासी चीफ़



इटोवाह नस्ल के इंडियन सरदार को किसी पर्व के लिए सजाया जा रहा है। यह भी कोलम्बस के पहुंचने के पहले के अमेरिका का दृश्य है।



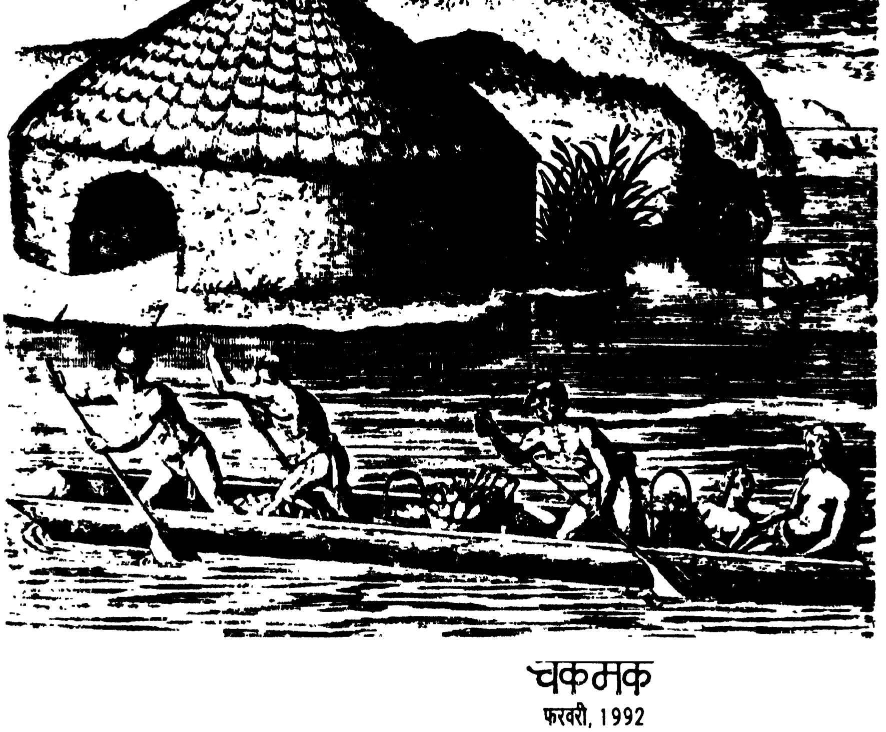
कोलम्बस की 'नई दुनिया' के लोग वहशी नहीं थे, जैसी कि उस समय धारणा थी। वहां के मूलनिवासी मौसम की पहली बर्फ़ पर बर्फ़-नाच में मस्त हैं। बर्फ़ में शिकार भी आसानी से किया जा सकता था। जानवरों का मांस ही उनका भोजन था।



गांव की सुरक्षा के लिए उसके इर्द-गिर्द लकडी के खभों की दीवार बनाई जाती थी। गांव के सरदार का घर, गाव के बीचो-बीच होता था।

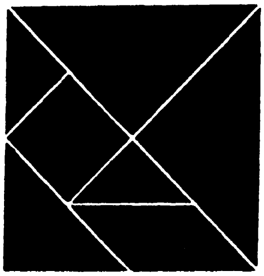
सन् 1200 के आसपास सूरजमुखी के फूलो और पक्षी की ये रचनाएं मिट्टी के एक बर्तन मे रखकर जमीन में दफ़ना दिए गए थे। इन्हें उन्नीसवी शताब्दी में खोजा गया। यानि कोलम्बस के वहा पहुचने के लगभग तीन सौ साल पहले दफ़नाया गया था।





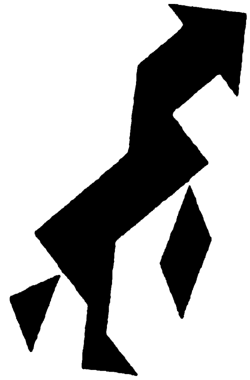
जिन द्वीपो पर कोलम्बस पहुंचा वहां बड़ी मात्रा मे फल उगते थे। वहां के निवासी साल मे दो बार इन फलों को तोडकर सार्वजनिक गोदामो मे रखते थे। इन गोदामों की नीव पत्थर की बनी होती थी। सब लोग इन्हीं गोदामों में से जरूरत के अनुसार चीजे निकालकर ले जाते थे। चोरी नहीं होती थी। कोई ज़रूरत से ज़्यादा भी नहीं निकालता था। सोचो, ऐसे लोगों को 'नई दुनिया' के खोजियों द्वारा वहशी कहना कहां तक सही था?

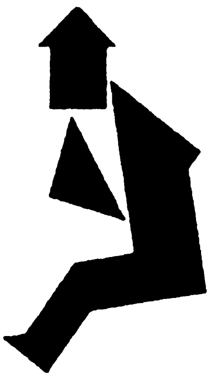
खेल पहेली

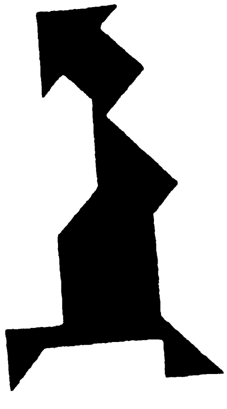


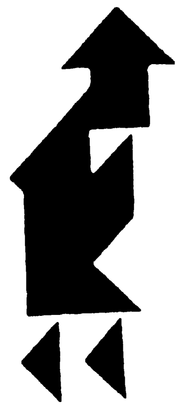
टेनग्राम के इन सात टुकड़ों को जोड़कर यहां दी गई विभिन्न आकृतियां बनी हैं। तुम भी बना देखो। (हल अगले अंक में)

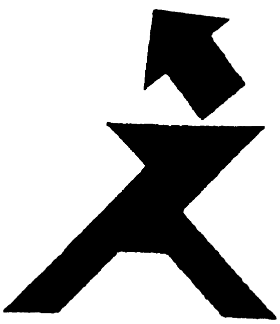


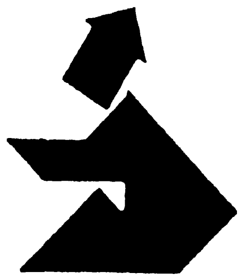


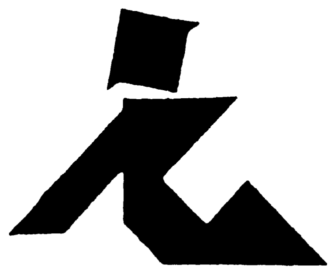




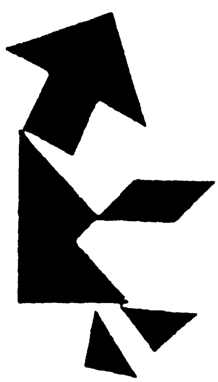




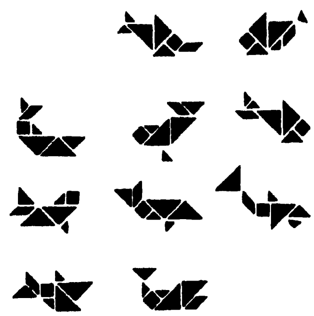




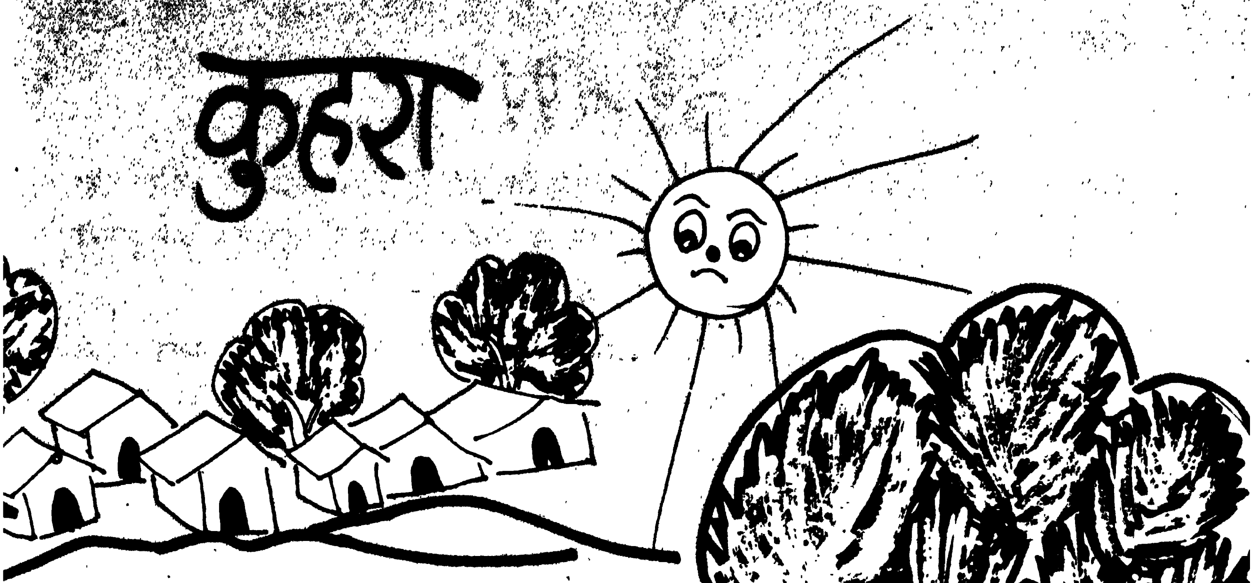




जनवरी, 92 अंक के हल



कुहरा



अम्मां
ये कुहरा क्यों छाता?

गुमे हुए घर
ग़ायब रस्ता
भीग गया है
मेरा बस्ता

मुझको नहीं
ज़रा भी भाता!

कौवे राजा
लेते झपकी
शान घुली
सूरज साहब की

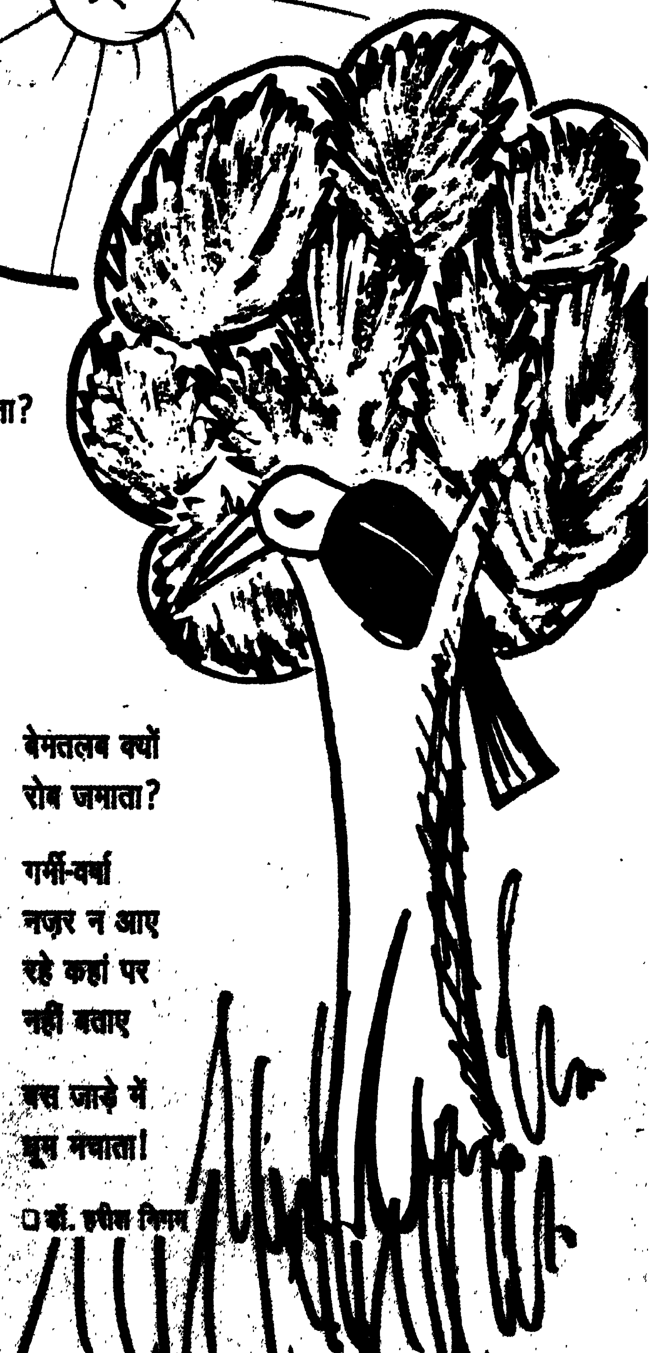
बेमतलब क्यों
रोब जमाता?

गर्मी-वर्षा
नज़र न आए
रहे कहां पर
नहीं बताए

बस जाड़े में
धूम मचाता!

□ डॉ. हरीश निगम





चित्र : [illegible]

चूंचूं और पूंचूं

रिमझिम-रिमझिम, झिर-मिर-झिर-मिर फुहार पड़ रही थी। हवा धीरे-धीरे कुछ गाती हुई-सी चल रही थी। बगिया के सारे पौधे बहुत ख़ुश थे। घास के नन्हे-नन्हे पत्ते भी झूम-झूम कर अपनी ख़ुशी दिखा रहे थे।

मौसम बड़ा मनभावन था। ऐसे प्यारे मौसम में बेचारा पूंचूं, बत्तख का नन्हा बच्चा, अपने घर में बैठा हुआ फुहार में खेल रहे एक दूसरे बच्चे को देख रहा था। उसका बड़ा मन हो रहा था कि वह भी उस बच्चे के साथ बरखा की रुनझुन में नाचे-कूदे, दौड़ लगाए। लेकिन अपने पापा के डर से वह घर के बाहर नहीं जा पा रहा था।

इस समय उसके पापा सो रहे थे। अचानक पूंचूं को बड़े ज़ोर की छींक आई और उसके पापा की नींद खुल गई। पूंचूं बुरी तरह डर गया। उसने सोचा, अब तो पापा ज़रूर गुस्सा हो जाएंगे और हो सकता है उसकी पिटाई भी कर दें।



लेकिन पापा हड़बड़ाकर उठे और घड़ी देखते हुए पूंचूं से बोले, "मुझे काम से ज़रा बाहर जाना है। तुम भी चाहो, तो बाहर जाकर खेल आओ।"

पूंचूं की ख़ुशी का ठिकाना न रहा! वह दौड़ता हुआ उस बच्चे के पास जा पहुंचा। वह बच्चा उसे देखकर पहले तो कुछ ठिठका। फिर बोला, "मैंने पहले कभी तुम्हें यहां नहीं देखा। लगता है नए आए हो।"

"हां। अभी कुछ दिन पहले ही मैं अपने पापा के साथ इस नए घर में आया हूं।"

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"पूंचूं। और तुम्हारा?"

"चूंचूं।"

"अरे वाह! चूंचूं-पूंचूं।" किलकारी भरते हुए बोला।

चूंचूं ने भी उसकी तान में तान मिलाई, "चूंचूं-पूंचूं।"

और फिर काफ़ी देर तक वे दोनों चूंचूं-पूंचूं, चूंचूं-पूंचूं की रट लगाए उछलते-कूदते रहे।

जब यह खेल ख़त्म हुआ, तो चूंचूं ने अपनी पीठ पर पूंछ के पास बने छोटे से उठे हुए



स्थान पर अपनी चोंच लगाई, जैसे वहां से कुछ निकाल रहा हो और फिर चोंच को अपने परों पर रगड़ने लगा, जैसे परों पर कुछ लगा रहा हो। उसने कई बार ऐसा किया और अपने पर फड़फड़ाए।

पूंचूं बड़े ग़ौर से उसे ऐसा करते हुए देख रहा था। उसने देखा, चूंचूं के पर बड़े साफ़-सुथरे और चमकदार हैं। उसके परों पर गिरते ही पानी की बूंदें फिसल जाती थीं। उसके पर पानी से बिलकुल भी नहीं भीगते थे। लेकिन उसके अपने पर ज़रा-सी फुहार में ही बुरी तरह-से भीग गए थे। सूखे रहने पर भी उसके पर रुखे-रुखे-से रहते थे।

अपने परों की बुरी हालत देखकर पूंचूं को रोना आ गया। उसे हलकी-हलकी ठंड भी लगने लगी और तड़ापड़ दो-चार छींकें भी आ गईं।

उसने चूंचूं से पूछा, "तुम्हारे पंख इतने सुंदर कैसे रहते हैं?"

उसका यह प्रश्न सुनकर चूंचूं को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, "तुम्हें नहीं मालूम?"

"नहीं।"

"अरे! ये बात तो यहां रहने वाले सभी बच्चे जानते हैं। अभी तुमने देखा नहीं, मैं कैसे अपने पर साफ़ कर रहा था?

"हां, देखा तो; लेकिन मुझे तुम्हारी तरह पर साफ़ करना नहीं आता।"

वह उसके परों को अपनी चोंच से सहलाते हुए बोला, "कोई बात नहीं। मैं तुम्हें सिखाऊंगा, परों को साफ़-सुथरा रखना।"

पूंचूं उत्सुकता से उसकी ओर देखने लगा।

चूंचूं ने बताया, "ये जो तुम्हारी पीठ पर पूंछ के पास उभरा हुआ छोटा-सा स्थान है और मेरे भी। इस स्थान से एक प्रकार का चिकना, तेल जैसा पदार्थ निकलता रहता है। यही पदार्थ चोंच की सहायता से हम अपने परों पर लगाते हैं; जिससे हमारे पर साफ़-सुथरे, मुलायम और चमकदार बने रहते हैं।"

"अरे, ये तो बड़ा आसान है।" पूंचूं ख़ुश होते हुए बोला और वह भी अपने पर साफ़ करने लगा।

चूंचूं बोला, "आओ, चलो। मैं तुम्हें अपने घर ले चलता हूं। मेरी मां तुम्हें देख कर बहुत ख़ुश होंगी।"

"नहीं। मेरे पापा डांटेंगे।"

"अरे, तुम इस बात की चिंता मत करो। मैं अपने पापा से कह दूंगा। वे तुम्हारे पापा से दोस्ती कर लेंगे। मैं भी तुम्हारे घर खेलने आया करूंगा!"

❑ **रावेन्द्र कुमार 'रवि'**
सभी चित्र : राजेश अंबालकर



कठफौड़ा

❑ अरविंद गुप्ते

जैसा कि इस पक्षी के नाम से ही पता चलता है, कि इस पक्षी का लकड़ी से निकट का संबंध है। अधिकतर समय इसे पेड़ों के तनों या शाखाओं पर अपनी लंबी चोंच से ठक-ठक करते हुए देखा जा सकता है। इसी कारण इसे **मराठी** में **सुतार पक्षी** और **अंग्रेज़ी** में **वुडपैकर** यानी लकड़ी पर चोंच मारने वाला कहते हैं।

तुम्हारे मन में शायद यह प्रश्न उठा होगा कि आखिर कठफौड़ा लकड़ी पर ठक-ठक क्यों करता रहता है? ऐसा यह भोजन की तलाश में करता है। पेड़ों की छाल के नीचे कई प्रकार के कीड़े-मकोड़े रहते हैं और ये कीड़े ही कठफौड़ा का भोजन हैं। कीड़ों की तलाश करते हुए कठफौड़ा को देखना बड़ा मनोरंजक होता है। पेड़ से चिपककर वह उसके चारों ओर ठक-ठक करता हुआ चक्कर लगाता है और इस प्रकार एक सिरे से दूसरे सिरे की ओर बढ़ता है। कभी-कभी आगे निकल जाने पर जब उसे याद आता है कि कोई भाग ठक-ठक करने से छूट गया तब वह उल्टा चलकर फिर से उस स्थान पर पहुंच जाता है। ठक-ठक की आवाज़ होने पर छाल के नीचे रहने वाले कीड़े घबराकर बाहर आ जाते हैं और कठफौड़ा उन्हें चटकर जाता है। यदि कीड़े ख़ुद बाहर न निकलें तो कठफौड़ा अपनी मज़बूत चोंच से छाल को तोड़कर उन्हें पकड़ लेता है। कठफौड़ा का एक अन्य प्रिय भोजन चींटियां हैं। चूंकि चींटियां अधिकतर ज़मीन पर ही रहती हैं, कठफौड़ा प्रायः ज़मीन पर उतर कर इन्हें खाता है। कीड़ों और चींटियों के अलावा पके हुए फल और फूलों का रस भी कठफौड़ा को प्रिय है।

हमारे देश में कठफौड़ा की साठ से अधिक जातियां पाई जाती हैं। इन सभी के भोजन में और ठक-ठक करने की आदत में समानता होती है। यहां हम उन दो जातियों के बारे में ही बात करेंगे जो भारत के लगभग सभी भागों में पाई जाती हैं।

इनमें से एक जाति का पक्षी आकार में मैना के बराबर होता है। इसके शरीर के ऊपरी भाग पर सुनहरा रंग होता है और पूंछ काली होती है। नर और मादा दोनों के सिर पर लाल रंग होता है। मानो टोपी पहनी हो, किंतु मादा की टोपी कुछ छोटी होती है। शरीर का निचला भाग सफ़ेद होता है और उस पर काले रंग की आड़ी धारियां होती हैं।

वैसे तो हिंदी में कठफौड़ा की सभी जातियों को कठफौड़ा (या कठफोड़वा) ही कहते हैं किंतु बस्तर में कठफौड़ा की इस जाति को **खिदरी** और मध्यप्रदेश में कुछ अन्य भागों में इसे **सोना काकतोला** कहते हैं। हम इसे **सुनहरा कठफौड़ा** कहेंगे।

सुनहरा कठफौड़ा जंगल और बस्ती, दोनों जगह रह लेता है। उसे तो बस पेड़ चाहिए जिन पर वह अपना भोजन ढूंढ सके।

(शेष पृष्ठ 31 पर)

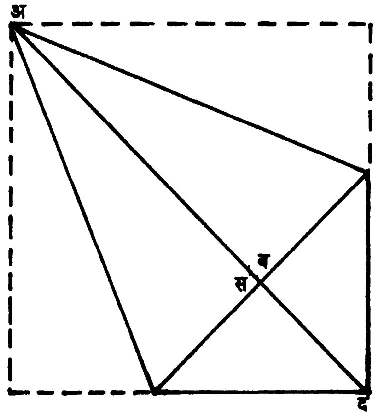
खेल कागज़ का

कागज़ को मोड़-मोड़कर विभिन्न चीज़ें बनाने में तुम्हें मज़ा आ रहा होगा। कहीं-कहीं दिक्क़त भी हो रही होगी। औरीगैमी में तो यह कहावत लागू होती है-

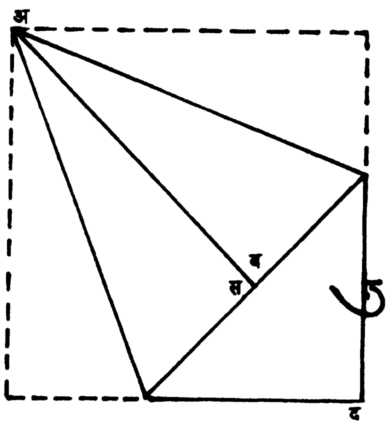
करत-करत अभ्यास के
जड़मति होत सुजान!

यानी अभ्यास करने से ही कोई चीज़ सीखी जा सकती है। इस बार जो आकृति तुम बनाओगे, उसमें चित्र 10 तक वही चरण हैं जो जनवरी, 92 अंक में थे।

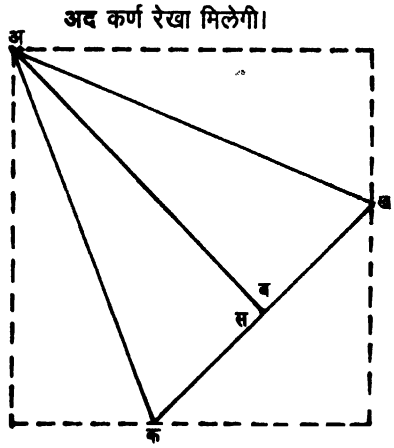
एक वर्गाकार कागज़ लो। उसके सिरों को नाम दो। अब **स** सिरे को **ब** से मिलाते हुए खाई मोड़ बनाओ। कागज़ को खोलने पर **अद** कर्ण रेखा मिलेगी।



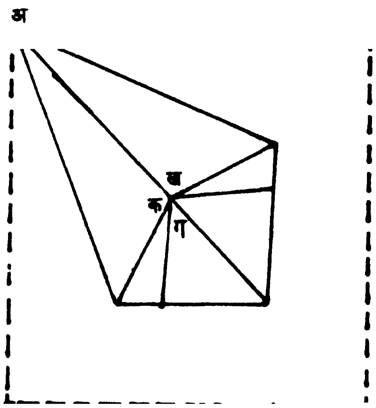
2. **अब** तथा **अस** भुजाओं को खाई मोड़ बनाते हुए कर्ण रेखा तक लाओ।



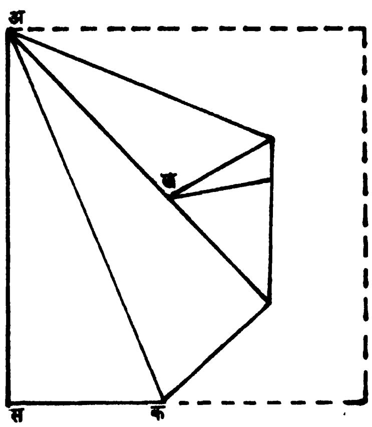
3. अब **द** सिरे को पहाड़ी मोड़ बनाते हुए पीछे की तरफ मोड़ो। यह बन गया **पतंग आधार।**



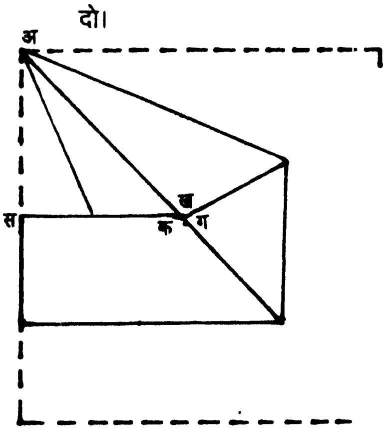
4. इस पतंग आधार में तुम्हें बड़े त्रिभुज में दो छोटे त्रिभुज दिखाई देंगे। इनके सिरों को भी नाम दे दो।



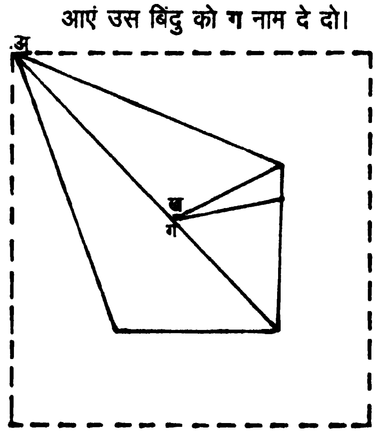
अब **क और ख** सिरों को खाई मोड़ बनाते हुए **अस** और **अब** भुजाओं पर लाओ। जहां दोनों सिरे आएं उस बिंदु को **ग** नाम दे दो।



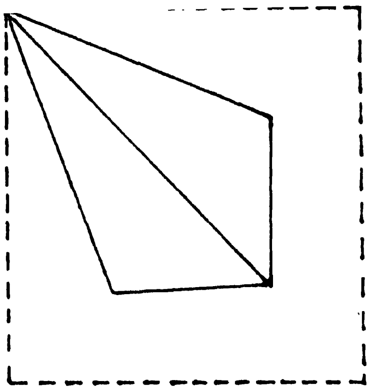
6. अब **क** सिरे के सारे मोड़ खोल दो।



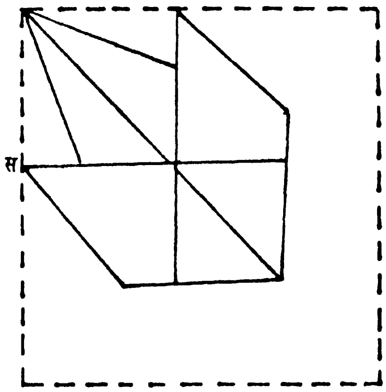
7. **क** सिरे को **अग** रेखा पर लाओ।



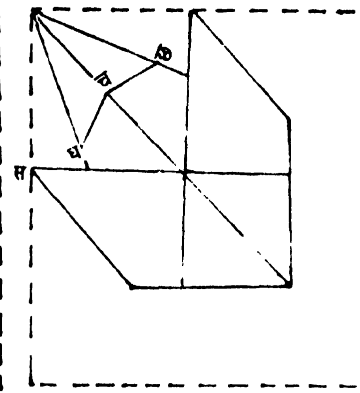
8. अब **स** सिरे को **ग** पर लाओ और **अस** भुजा को **अब** भुजा के समानांतर रखो।



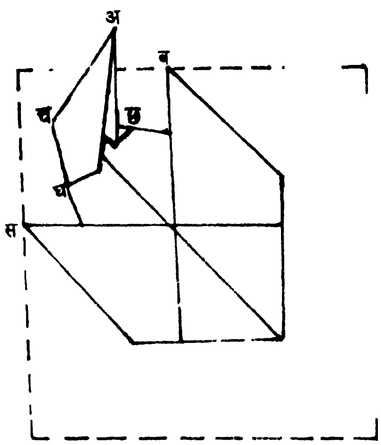
9. अब **ख** सिरे के मोड़ भी इसी तरह खोलो। **ख** सिरे को **अग** भुजा पर लाओ। **ब** सिरे को **ग** बिंदु पर ले जाओ।



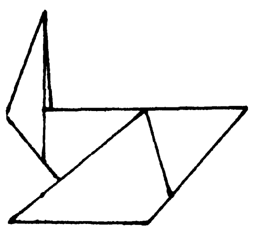
10. अब **स** और **ब** सिरों को पलटाकर ऊपर की ओर ले जाओ। ऐसा करने से दोनों सिरे कान जैसे बन जाएंगे।



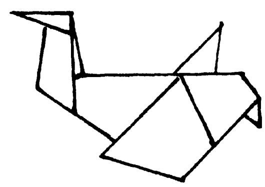
11. उठे हुए कानों और **अ** सिरे के बीच के हिस्से में **घ च छ** रेखा बनाओ।



12. अब इस रेखा पर से खाई मोड़ बनाते हुए **अ** सिरे को अंदर की तरफ लाओ।



13. आकृति को कर्ण रेखा पर से पहाड़ी मोड़ बनाते हुए आधा कर लो।



14. अब **अ** सिरे को मोड़कर चोंच बनाओ। आकृति के पिछले सिरे को भी अंदर की तरफ दबाकर पूंछ बनाओ। तुम ख़ुद ही तय करो कि क्या बन गया!

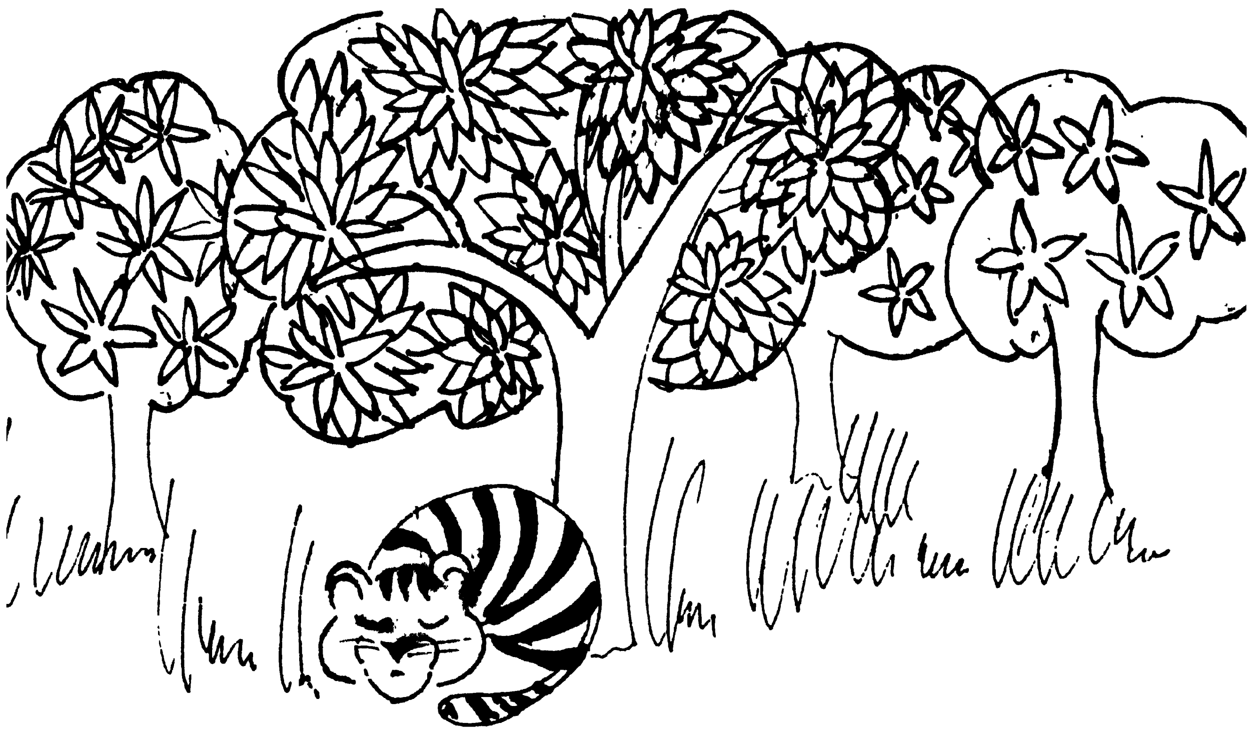
(पृष्ठ 29 का शेष)

इसका प्रजनन काल मार्च से मई तक होता है। इसका घोंसला बड़ी मेहनत से बनता है। किसी पेड़ के तने को ज़मीन से 10-12 फीट की ऊंचाई पर नर और मादा मिलकर खोखला करते हैं और यही खोखली जगह इनका घोंसला होता है। इसमें मादा 3 सफ़ेद अंडे देती है। अंडों को सेना, बच्चों के लिए भोजन जुटाना, आदि सब काम नर और मादा मिलकर करते हैं।

*बहुतायत से पाई जाने वाली दूसरी जाति का कठफौड़ा बुलबुल के बराबर यानी सुनहरे कठफौड़ा से कुछ छोटा होता है। इसकी पीठ और पूंछ पर काला रंग होता है जिस पर सफ़ेद धब्बे होते हैं, सिर पीला होता है और उस पर छोटी टोपी के समान लाल रंग होता है। दोनों पंखों के नीचे भी लाल रंग होता है। नीचे का शेष भाग हलके रंग का होता है और उस पर कत्थई रंग की खड़ी धारियां होती हैं। इसे मध्यप्रदेश के कुछ भागों में **चितला काकतोला** कहते हैं। हम इसे **चित्तीदार कठफौड़ा** कहेंगे।*

चित्तीदार कठफौड़ा का भोजन, भोजन ढूंढने का तरीक़ा, प्रजनन काल, घोंसला, अंडे आदि सब कुछ सुनहरे कठफौड़े के समान ही होता है।

(चित्र सौजन्य : बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी)



कहानी

भालू ने खेली फुटबॉल

सर्दियों का मौसम। सुबह का वक़्त। चारों ओर कोहरा ही कोहरा। एक शेर का बच्चा सर्दी से सिकुड़ कर गोल-मटोल बना जामुन के पेड़ के नीचे पड़ा था।

इधर भालू साहब सुबह की सैर पर निकल आए थे। निकल तो आए थे, लेकिन पछता रहे थे। तोबा-तोबा, इतनी ठंड। तभी उनकी नज़र जामुन के पेड़ के नीचे पड़ी। कोहरे की वजह से कुछ भी साफ़ नहीं दिख रहा था। आंखें फोड़ीं। अक़ल दौड़ाई- अहा फुटबॉल। सोचा, 'चलो इस तरह कुछ गर्मी हासिल की जाए।'

आव देखा न ताव। दौड़ते गए। और पंजे से उछाल दिया शेर के बच्चे को।

हड़बड़ी में शेर-बच्चा चिंघाड़ा। जामुन की एक डाल पकड़ी। मगर डाल टूट गई। भालू साहब जल्दी ही मामला समझ गए। पछतावा हुआ, लेकिन बड़ी फुर्ती से दोनों हाथ बढ़ा कर गिरते हुए शेर को कैच कर लिया।

"अरे यह क्या!"

भालू ने देखा शेर फिर उछालने के लिए अनुरोध कर रहा है।

"एक बार फिर भालू दादा।"

बार-बार यही होने लगा। शेर को उछलने में मज़ा आ रहा था। वह 'बस सिर्फ़ एक बार और' की रट लगाने लगता। परंतु भालू थक कर परेशान हो गया था, 'ओह किस आफ़त में आ फंसा।'

बाहरवीं बार किक लगाते ही भालू ने अपने घर की ओर रेस लगाई और ग़ायब हो गया।

अबकी शेर धड़ाम से ज़मीन पर आ गिरा। चोट करारी लगी।



कराहते हुए भालू को गाली देने लगा। परंतु थोड़ी देर में सोचा, 'नहीं गलती मेरी ही है।'

अब कोहरा छट गया। बादल हट गए। सूरज की चमकीली किरणें चारों तरफ फैल चलीं। जामुन के पेड़ का मालिक वहां आया। अपने पेड़ की दुर्दशा देखी तो शेर के बच्चे पर बरस पड़ा, "सत्यानाश कर दिया मेरे पेड़ का। लाओ हर्ज़ाना।"



शेर ने समझाया, "थोड़ा ठीक हो जाऊं तो रुपए भर दूंगा।"

मालिक ने कहा, "ठीक है।"

मालिक के वहां से जाते ही शेर का बच्चा भी नौ-दो ग्यारह हो लिया। उसने सोचा, 'जान बची और लाखों पाए।'

फिर शेर का बच्चा कभी लौटकर वहां नहीं आया।

❑ **हरदर्शन सहगल**
सभी चित्र : जया विवेक



क्यों.. क्यों.. 17

क्यों.. क्यों..12 में पूछे गए सवालों की तरह दो और सवाल हमारे मन में हैं। क्या उनके पीछे भी ऐसी ही धारणाएं प्रचलित कर दी गई हैं या सचमुच कोई आधार है? आओ सवाल पर बात करते हैं। तुमने भी देखा होगा कि चारपाई, कुर्सी या अन्य किसी जगह पर बैठा कोई व्यक्ति यदि अपनी टांगें हिलाता है तो उसे मना किया जाता है कि टांग मत हिलाओ। **भला क्यों?** इसी तरह जब कोई बच्चा मुंह से फुड़की बजाता है तो उसे भी मना किया जाता है, और कहा जाता है कि ये बीमार पड़ने के लक्षण हैं। **भला कैसे?**

इन क्यों और कैसे के जवाब हमें **15 अप्रैल, 1992** तक भेज सकते हो!

क्यों.. क्यों..12 : उत्तर

सितंबर, 91 में दो सवाल पूछे गए थे। एक तो यह कि **शाम को झाडू लगाने के लिए क्यों मना किया जाता है?** और दूसरा कि **चप्पल-जूते उलटे रखने पर डांट क्यों पड़ती है?**

जवाब में आए पत्रों को देखने पर यही पता चलता है कि इन दोनों ही बातों पर बेकार ही नाक-मुंह सिकोड़ा जाता है। वास्तव में इनका संबंध हमारे रहन-सहन के तौर-तरीक़ों से है। तुमने देखा होगा कि जो बातें हमें अच्छी नहीं लगती उनके लिए हम कुछ ऐसी धारणाएं प्रचलित कर देते हैं, जिससे लोग उन्हें करने से बचें। जैसे चप्पल-जूते उलटे रखने पर कहा जाता है, 'सीधे करके रखो, वरना किसी से झगड़ा होगा।' अब वैसे चाहे हम उन्हें सीधा करके न रखें, पर शायद झगड़े के डर से ज़रूर रख देंगे। पर क्या सचमुच झगड़ा होता है? आज़माकर देख लो।

क्यों.. क्यों..12 के जवाब इन्होंने भेजे:

सिद्धार्थ, बालोतरा, **राजस्थान**। निर्मल कुमार गोयल, पटना, **बिहार**। चंद्रभूषण श्रीवास्तव, कट्ठीबाड़ा, झाबुआ। अजित मिश्र, दरिमा, सरगुजा। धर्मेंद्र जायसवाल, हाटपीपल्या, देवास। एन.आर.भगत, रामचंद्रपुर, सरगुजा। विनोद कुमार, फूलबगड़ी सुकमा, बस्तर। विक्रम सिंह राठौर, अमझेरा, धार। बृजेश काबरा, हरदा। पदमसिंह धाकड़, ग्वालियर। सुनील कुमार सोलंकी, बिसौनी कला, होशंगाबाद। मणिशंकर स्थापक, टिमरनी, होशंगाबाद। राधेश्याम यादव, बेलसोंडा, रायपुर। मुकेश कुशवाहा, करकटी, शहडोल। अपर्णा कनोड़िया,लश्कर, ग्वालियर, **सभी मध्यप्रदेश।**

ध्यान रहे यह ज़रूरी नहीं है कि हर पुरानी प्रथा, परंपरा या रीतिरिवाज़ दकियानूसी ही हो, उसके पीछे कोई तार्किक आधार भी हो सकता है। आधार एक या एक से अधिक भी हो सकते हैं। पर यह भी आवश्यक नहीं है कि हर परंपरा या प्रथा के पीछे आधार होगा ही।

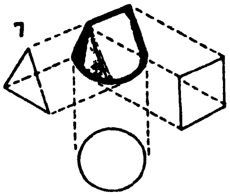
माथापच्ची उत्तर जनवरी, 92 के

उन्नीस किलोमीटर।

चकमक को उठाकर अपनी आंख के समानांतर लाओ और फिर पढ़ने की कोशिश करो। 1941 लिखा है।

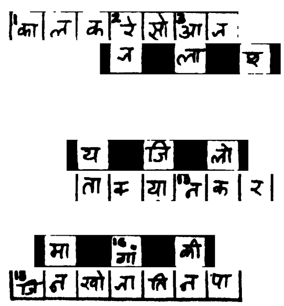
4. 12 फुट ऊंचाई से।
5. 30 बेर।
6. डलिया में बीड़ियां रखी हैं। बीच में तंबाकू है।

7

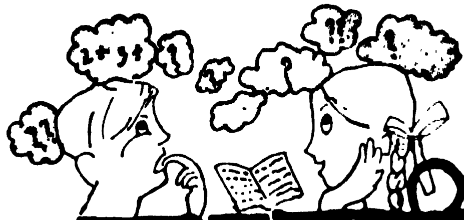


8. 50 पैसे।

वर्ग पहेली 9 : हल

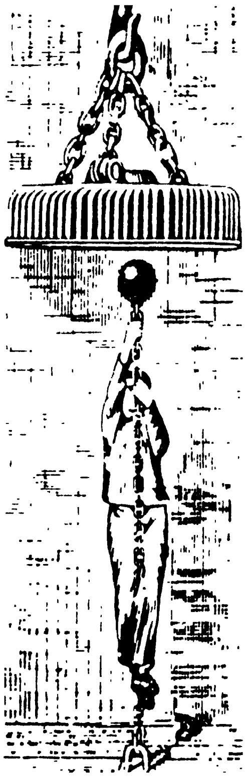



बिंदु
साहू
इकाई परीक्षा में तुम्हारी क्या प्रगति है?
तुम स्वयं मेरा प्रगति पत्र देख लो।
तुम तो सभी विषयों में अनुत्तीर्ण हो।
अच्छा तो तुम पढ़ती लिखती नहीं हो! न जाने दिन भर क्या करती फिरती हो?
तुम्हारा मुझ पर यह आरोप उचित नहीं। मैं बराबर पढ़ती-लिखती हूं।
मैं भी तो सुनूं कि तुम क्या-क्या पढ़ती लिखती हो?
मैं अपने मित्रों को पत्र लिखती हूं और नियमित चकमक पढ़ती हूं।
साहू



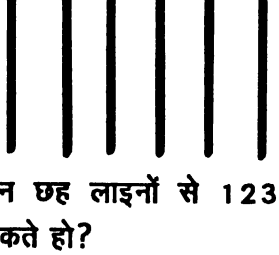
माथापच्ची

(1)



इस चित्र को ध्यान से देखो। यह आदमी लोहे की एक जंज़ीर से लटका हुआ है, पर जंज़ीर हवा में लटक रही है। क्या यह संभव है और कैसे?

(2)



क्या तुम इन छह लाइनों से 123 की संख्या प्राप्त कर सकते हो?

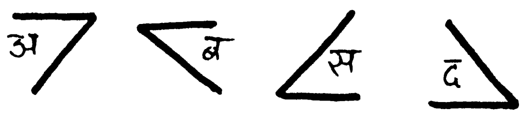
(3)

1 से 5 तक के लगातार अंकों का जोड़ 16 होता है। ऐसी ही लगातार पांच संख्याएं ढूंढो जिनका जोड़ 2000 हो!

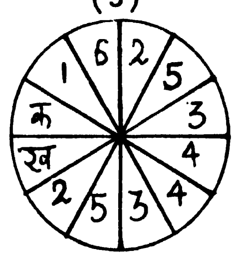
(4)



यहां दिया चित्र आइने के सामने रखें और आइने के सिरों को बदल दें यानी निचला सिरा ऊपर कर दें और ऊपर का सिरा नीचे, तो बताओ चित्र का प्रतिबिंब, नीचे दिए चित्रों में से कौन-सा होगा?



(5)

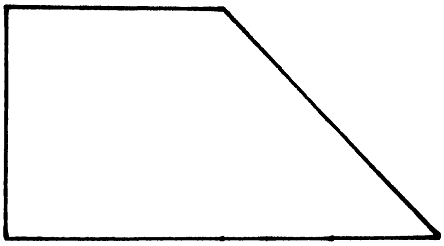


क और **ख** की जगह कौन से अंक आएंगे?

(6)

दो दोस्त आपस में इस बात पर झगड़ पड़े कि उनमें गणित में कौन तेज़ है। लड़ते-लड़ते वे हमारे पास आए। हमने उन्हें एक सवाल हल करने को दे दिया, और कहा कि जो पहले हल कर दे वह तेज़। तुम भी जानना चाहते हो सवाल! तो लो, सवाल है कि अंक 2 के उपयोग से संख्या 23, अंक 4 से 45 तथा अंक 9 से 1000 की संख्या लिखो!

(7)



यहां दिया गया चित्र एक वर्ग और ठीक उसके आधे हिस्से से मिलकर बना है! क्या तुम इस चित्र को चार बराबर-बराबर भागों में बांट सकते हो?

(8)

एक मित्र अपने दूसरे मित्र को अपने घर का फोटो एलबम दिखा रहा था। एक फोटो को दिखाते हुए उसने कहा, 'फोटो में जो व्यक्ति है उसके पिता मेरे पिता के लड़के हैं। लेकिन तुम तो जानते हो मेरा कोई भाई नहीं है।'

तुम बताओ फोटो किसकी है और एलबम दिखाने वाले से उसका क्या संबंध है?

ज़रा सोचकर जवाब दो!

सायकिल की पुरानी ट्यूब के कैंची से छह टुकड़े करने हैं, तो उसे कितनी जगह से काटना पड़ेगा?

आठ और आठ पंद्रह होता है या आठ और आठ पंद्रह होते हैं, दोनों में से कौन-सा सही है?

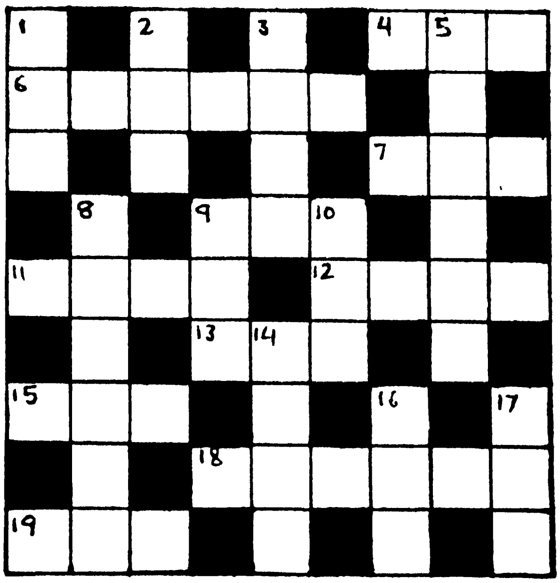
तीन मां हैं। प्रत्येक मां की दो-दो लड़कियां हैं। वे सब सात अलग-अलग कमरों में सोती हैं। यह कैसे संभव है।

मुझे हर आधे घंटे बाद दवा की एक खुराक लेनी है, तो तीन-खुराक कितने समय में ले लूंगा?

(9)

यदि 40 मीटर कंटीले तार से 100 वर्गमीटर के एक मैदान को चारों ओर से घेरा जा सकता है, तो बताओ 80 मीटर तार से कितने वर्गमीटर के मैदान को घेर सकते हैं?

वर्ग पहेली-10



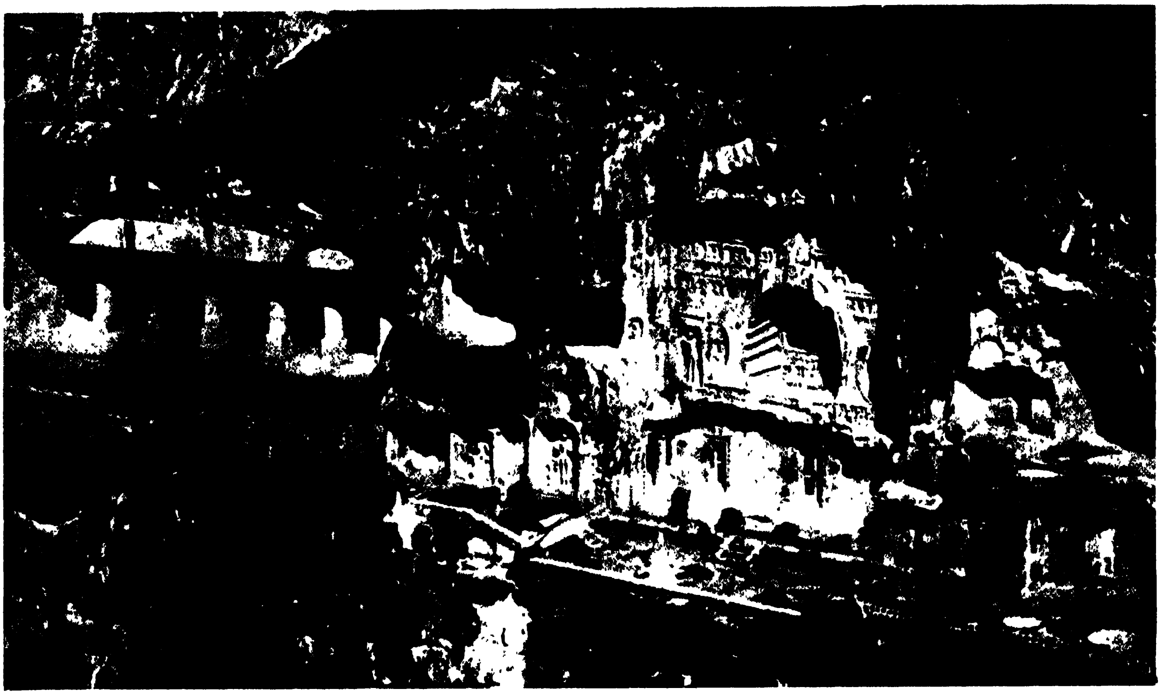
संकेत : बाएं से दाएं

4. भरपूर, अतुल (3)
6. बर्दाशत करने की ताक़त (6)
7. साफ़ मन व तन में देश छिपा है (3)
9. रोग का क्या हो सकता है?
11. नागरस का उल्टा मुखिया (4)
12. कलचीन का उल्टा-सीधा अनुकरण करने वाला बंदर (4)
13. कशमकश में पानी की थैली (3)
15. अच्छा का उल्टा (3)
18. चौंकाने वाली ख़बर (5)
19. बिना काज के यह बेकार है (3)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. चने का आटा (3)
2. मकान न अच्छा हो तो न सही, वहां जंगल तो है (3)
3. क्रम (4)
5. किताबघर (6)
8. तीखा स्वाद लगने की अवस्था (6)
9. पुरस्कार (3)
10. जन्म देने वाला (3)
14. ओस, काश बन मयूर में नाचे (4)
16. थोड़ा सा मुरमुरा बाद में नीम, तो बनेगा हिसाब-किताब करने वाला (3)
17. सचेत, जागा हुआ (3)

अजंता



आजकल हम जो भी इमारतें देखते हैं, ख़ासकर शहर, कस्बों में, उनकी दीवारें आमतौर पर सपाट एवं कोरी रहती हैं। चाहे वह घर हो, दफ़्तर हो, अस्पताल हो, धर्मशाला हो या फिर ऐसी कोई अन्य जगह। हां, गांवों में तो फिर भी घरों की दीवारों पर कुछ चित्र आदि बने रहते हैं। शहरों में तो ज़्यादा से ज़्यादा दीवारों पर कोई चित्र आदि टांग दिया जाता है। घर में भी अगर बच्चे दीवारों पर पेंसिल या चाक से कुछ बना दें, तो उनकी पिटाई हो जाती है। शायद कभी तुम्हारी भी हुई हो!

मगर पुराने ज़माने में लोगों को कोरी दीवारें बिलकुल पसंद न थीं। लगभग सभी लोग, चाहे वे मिट्टी के झोंपड़े में रहते हों या पक्के मकानों में; चाहे वे शहरी अमीर हों या राजा-महाराजा; या फिर घने जंगलों के बीच गुफाओं में ध्यान लगाने वाले मुनि हों- सबके सब अपने यहां की दीवारों पर सुंदर रंग-बिरंगे चित्र देखना पसंद करते थे।

उन दिनों चित्र आमतौर पर दीवारों पर ही बनाए जाते थे। तुम ज़रा कल्पना करो- ऐसी जगह जहां चारों ओर दीवार और छत रंग-बिरंगे चित्रों से ढकी हों, जिनमें सैर करते राजा, रानियां, नाचते-गाते, हंसते-रोते लोग; पहाड़ों से कलकल करते गिरते झरने, फलों और फूलों से लदे पेड़; पेड़ों पर कूदते बंदर, जंगलों में स्वच्छंद घूमते हाथियों और हिरणों के झुंड; खिलते फूल, बेलबूटे आदि चित्रित किए गए हों; वहां कैसा लगेगा? शायद ऐसा जैसे हम किसी सपनों की दुनिया में आ पहुंचे हैं।

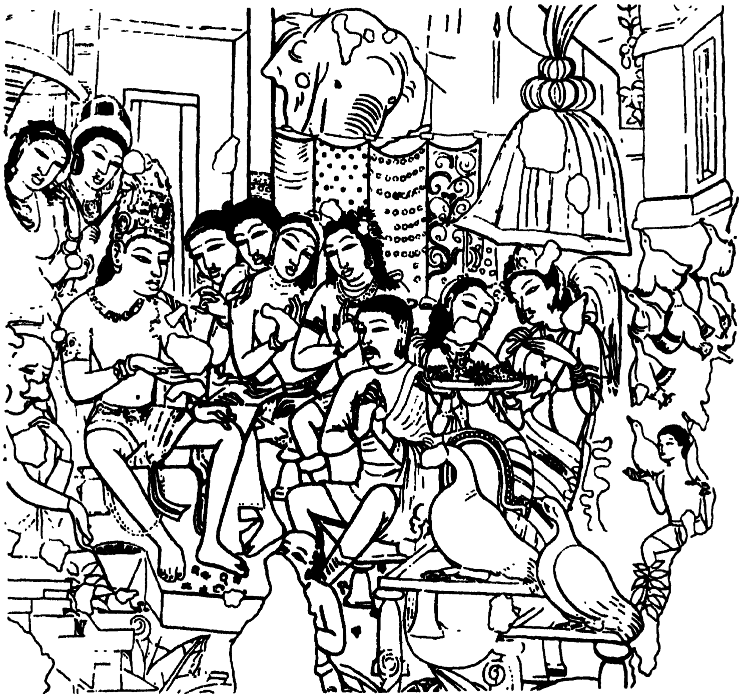
ऐसे सपनों की वास्तविक दुनिया के घर, महल तथा अन्य इमारतें तो अब लगभग न के बराबर बची हैं। हां, उस समय के बारे में उपलब्ध ग्रंथों में इनका वर्णन मिलता है। इन ग्रंथों में बताया गया है कि हर सभ्य नागरिक को चित्रकला में निपुण होना चाहिए। उसे अपने रहने की जगह में तूलिका (ब्रश) और रंग तैयार रखना चाहिए। तुम सोच रहे होगे काश ऐसी कोई जगह आज होती, तो हम भी उसका आनंद उठाते। वास्तव में आज भी ऐसी एक जगह है- अजंता की गुफाएं!

अजंता का नाम तुमने अपनी पाठ्यपुस्तकों में पढ़ा होगा। अजंता की गुफाएं एक अत्यंत रमणीक स्थान पर बनी हैं। पहाड़ की चट्टानों को घोड़े के नाल के आकार की कंदरा में काटती हुई एक छोटी-सी नदी बहती है। एक तरफ की चट्टानी दीवार को काटकर गुफाएं बनाई गई हैं। गुफाओं के अंदर बड़े-बड़े कमरे, सभागृह, मंदिर आदि हैं। इन्हीं की दीवारों तथा छतों पर चित्र और मूर्तियां बनीं हैं।

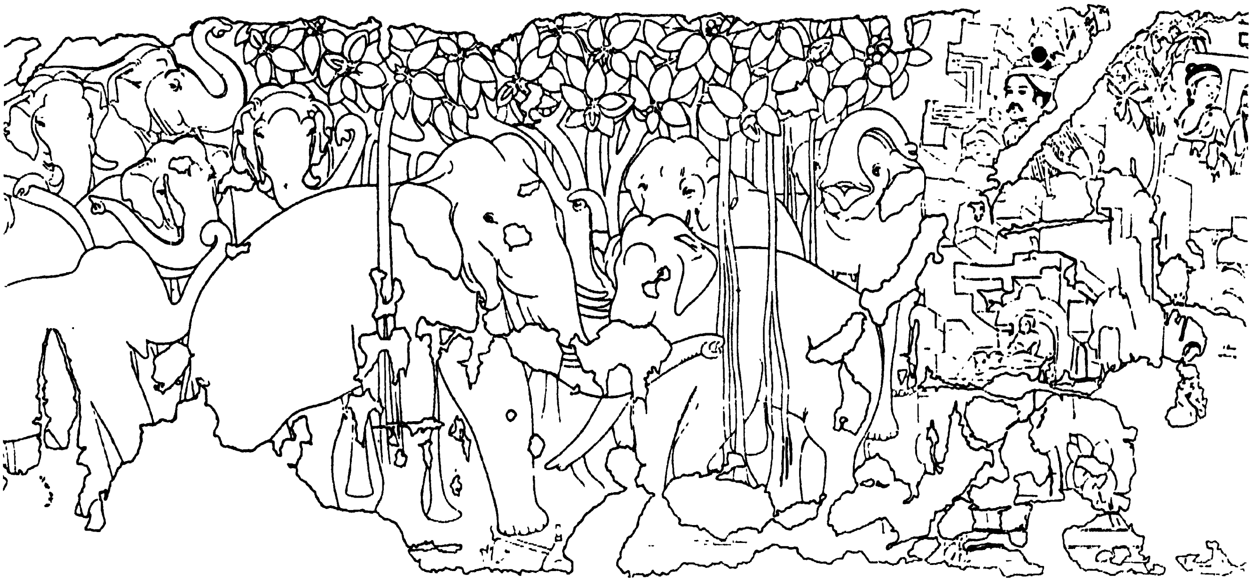
ये गुफाएं अलग-अलग समय में बनी हैं। कुछ गुफाएं दो हज़ार साल पुरानी हैं तो कुछ लगभग एक हजार छः सौ साल पुरानी। घने जंगल के बीच विशाल बरगद के तले विश्राम कर रहे हाथियों के झुंड का चित्र जिस गुफा में है वह सबसे पुरानी गुफाओं में से एक है। किसने बनवाईं ये गुफाएं? किसी राजा-महाराजा ने? नहीं! इन गुफाओं को अजंता के आसपास के शहरों में रहने वाले धनी व्यापारियों या किसानों ने बनवाया था। इन लोगों ने गुफाओं के बाहर अपने नाम भी खुदवाए थे। एक गुफा के बाहर खुदा है- कठहाड़ी; तो एक अन्य गुफा के बाहर घनामदड़ नाम खुदा है।

ये लोग बौद्ध मत से प्रभावित थे। वास्तव में उन्होंने ये गुफाएं बौद्ध भिक्षुओं के रहने एवं उपासना करने के लिए बनवाई थी । बौद्ध भिक्षु साल में कम से कम चार-पांच महीने जंगलों में स्थित इन गुफाओं में रहकर ध्यान लगाना, पढ़ना-पढ़ाना पसंद करते थे।

लेकिन अजंता की गुफाओं में ये चित्र और मूर्तियां किसने बनवाईं, इस पर बहुत अलग-अलग मत हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि इन्हें बौद्ध भिक्षुओं ने ही बनाया है। संभवतः भिक्षुओं में सृजनात्मक प्रतिभा वाले कुछ ऐसे लोग भी थे, जो अपने आराधना-स्थलों और आश्रमों को तूलिका और छैनी के कौशल से सजाकर रखने में आनंद का अनुभव करते थे। एक मत यह है कि जिन व्यापारियों तथा किसानों ने ये गुफाएं बनवाईं उन्होंने ही अपनी पसंद के चित्रकारों/शिल्पकारों से इन



यह अजंता की गुफा की दीवार पर बने रंगीन चित्र की रेखा अनुकृति है। यह हंस जातक कथा का एक चित्र है। कथा के अनुसार बुद्ध अपने पिछले किसी जन्म में हंस के रूप में जन्मे थे। तब एक बहेलिया उन्हें और उनके साथ एक अन्य हंस को पकड़कर राजा के पास ले गया। चित्र में दोनों हंस राजा-रानी और अन्य दरबारियों को धर्म संबंधी उपदेश दे रहे हैं। चित्र के एक कोने में बहेलिए को हंस पकड़ते हुए भी दिखाया गया है। इस चित्र के मूलचित्र में भी कुछ हिस्सों का रंग उखड़ गया है।



घने जंगल के बीच एक विशाल बरगद के तले विश्राम कर रहे हाथियों का झुंड। यहां जो चित्र तुम देख रहे हो वह मूलचित्र की रेखा अनुकृति है। मूलचित्र रंगीन है। ऐसा माना जाता है कि यह चित्र लगभग दो हज़ार वर्ष पुराना है। इतना पुराना होने के कारण इन चित्रों के बीच-बीच में से कुछ हिस्सों के रंग उखड़ गए हैं। ये हिस्से चित्र में ख़ाली दिख रहे हैं।

गुफाओं को सजवाया।

अजंता के चित्रों का मुख्य विषय तो बुद्ध के जीवन से संबंधित जातक कथाएं और बौद्ध धर्म है। लेकिन चित्र बनाने वालों को शायद जंगल के बीच चिंतन-मनन भाता नहीं था या वे अपने आसपास की जीवंत बातों को उनके असली रूप में दिखाना चाहते थे। इसीलिए संभवतः चित्रों में जंगल, जानवर, लोग, राजा-रानी, वनवासी लोगों आदि को चित्रित किया गया है। वैसे अजंता में देवता या मुनियों के चित्र कम और दीगर लोगों के चित्र अधिक हैं।

अजंता के चित्रों से साफ़ ज़ाहिर होता है कि उन दिनों के लोग अपने जीवन व उसकी बातों से न केवल बहुत लगाव रखते थे, बल्कि उनसे बहुत आनंद लेते थे।

इन चित्रों से कुछ और बातें भी पता चलती हैं, जैसे वे लोग लंबी और पतली आंख को सुंदर मानते थे। चित्रों में सभी लोगों की आंखें लंबी बनी हैं। ऐसी बहुत-सी और बातें, जैसे लोगों का पहनावा, रहन-सहन, हाव-भाव आदि इन चित्रों से पता चलती हैं।

यहां छपे चित्रों को देखकर तुम्हें क्या पता चलता है, लिखकर हमें भी बताओ!

❑ सी. एन. सुब्रह्मणय्म

[चित्र, एलबम ऑफ़ इंडियन पेटिंग्स् (मुल्कराज आनंद); अजंता म्यूरलस् (संपादक-ए.घोष) तथा मोनूमेंटस ऑफ़ सिविलाइजेशन ऑफ़ इंडिया से साभार]

सामने के पृष्ठ पर रंगीन चित्र देखो-

(ऊपर) यह अजंता की एक गुफा की छत पर बना चित्र है। इसमें फूल और बेलों की प्राकृतिक सुंदरता तथा गोल, चौकोर जैसे ज्यामितीय आकारों का बहुत ही सुंदर सामंजस्य है।

(नीचे) यह एक गुफा के अंदर बने दरवाज़े की चौखट का चित्र है। चौखट के दोनों ओर गंगा और यमुना (नदियों) की सुंदर मूर्तियां बनीं हैं। इन मूर्तियों के ऊपर हरे रंग से पेड़ बने हैं। चौखट के ऊपर तीन स्तर दिखाई दे रहे हैं। अलग-अलग स्तर पर चित्र भी अलग-अलग हैं। सबसे निचले स्तर पर बेलबूटे बने हैं। बीच वाले स्तर पर आपस में बतिया रहे दंपतियों को चित्रित किया गया है और सबसे ऊपर बुद्ध के अलग-अलग स्वरूप के चित्र हैं। चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुकला के मिश्रण का यह सुंदर उदाहरण है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि बुद्ध स्वयं यह चाहते थे कि उन्हें पूजा नहीं जाए। इसीलिए बहुत समय तक न तो उनका कोई चित्र बनाया गया, न ही मूर्ति। फिर धीरे-धीरे उन्हें चित्रित करने के लिए कुछ प्रतीक इस्तेमाल किए गए। अजंता के समय तक आते-आते उनके चित्र तथा मूर्तियां भी बनने लगीं।

